केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 36

अप्रैल–जून 2023

यूपीआई इंटरऑपरेबल सीबीडीसी ऐप

लॉन्च करने वाला

भारत का पहला बैंक

केनरा डिजिटल रुपे

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate
Together We Can

दिनांक 31.05.2023 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 188वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान केनरा ज्योति पत्रिका के 35वें अंक का विमोचन करते हुए श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, साथ में श्री डी. सुरेन्द्रन, मुख्य महाप्रबंधक, श्री संदीप जे गवारे, मुख्य महाप्रबंधक एवं उपस्थित अन्य कार्यपालकगण।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में अमूल्य योगदान एवं उत्कृष्टता के लिए केनरा बैंक को 3 अगस्त, 2023 को ओडिशा के जगन्नाथ पुरी में आयोजित 16वें हिंदी सम्मेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजभाषा अकादमी द्वारा राजभाषा सम्मान शील्ड से सम्मानित किया गया। केनरा बैंक की ओर से महाप्रबंधक श्री जगदीश चंद्र ने राजभाषा सम्मान शील्ड प्राप्त किया।

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री अशोक चंद्र
कार्यपालक निदेशक

श्री डी. सुरेन्द्रन
मुख्य महाप्रबंधक

श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

संपादक
सुश्री रीनु मीना, प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री विजय कुमार, अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

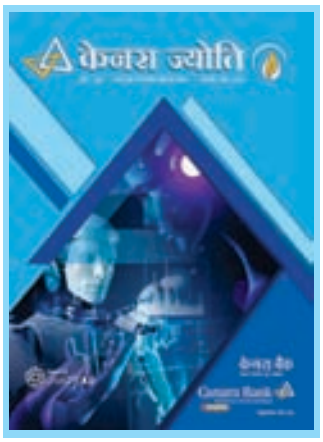

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश – के. सत्यनारायण राजु	1
मुख्य संपादक का संदेश – ई. रमेश	2
चाटुकारिता सम्मान समारोह – आशुतोष कुमार पाण्डेय	4
माँ की लोरी –धीरज कुमार	8
बचपन – नरेन्द्र देव पाण्डेय	8
वैश्वीकरण बनाम क्षेत्रीय एकीकरण – गणेश प्रताप गुजर	9
यात्रा वृत्तांत : भारत के शक्ति केंद्र से भौगोलिक केंद्र तक – गौरव जोशी	11
नेताजी की वसीयत – मोहम्मद इमरान अंसारी	15
एक उम्मीद है – रुचि जैन	17
साइबर सुरक्षा के लिए 5G की चुनौतियाँ – प्रमोद कुमार विश्वकर्मा	18
बच्चों को उनका बचपन जीने दें – अश्वनी कुमार गुप्ता	21
बैंक कर्मी हैं हम! – प्रणब महापात्र	22
नराकास (बैंक व बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध वार्षिक बैठक	23
प्रधान कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम	24
पुस्तकालय दिवस की झलकियाँ	26
मित्रता – प्रियान्शु गौतम	27
देश का किसान – प्रतिभा राजपूत	27
एक बारिश भरी शाम – निधि माझा	28
चार लोग – प्रमोद रंजन	29
मृगतृष्णा – प्रियंका आनंद	30
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी... – नितिन गुप्ता	31
सब्सिडी – श्वेता शर्मा	32
बैंकिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स : फायदे व चुनौतियां – हर्षिया	36
सफर स्कंदगिरी का – अंकिता कुमारी	40
जी चाहता है – ऋचा बैजल	43
मंज़र – स्वाति झा	43
कृषि वित्त : मुख्य चुनौतियाँ व इसके समाधान – प्रवीण तिवाड़ी	44
ओएनडीसी (ई-कॉमर्स इंडस्ट्री का यूपीआई) – अमित सिंह	46
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला – बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	48

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की प्रतिष्ठित हिंदी गृह पत्रिका ''केनरा ज्योति'' के माध्यम से आप सभी से एक बार पुन: संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

हमारे बैंक में अपने कारोबार की वृद्धि के साथ-साथ अपने ग्राहकों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए सतत उत्कृष्ट ग्राहक सेवा उपलब्ध कराने के लिए हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। कहा जाता है कि बहुभाषिक होने के कई लाभ होते हैं जैसे बहुभाषी लोग अपने परिवेश का अवलोकन करने में बेहतर होते हैं, दिमाग तेज़ होता है, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, अपनी मातृभाषा और अधिक बेहतर बनती है, नेटवर्किंग कौशल बढ़ता है, एक साथ कई काम करने की क्षमता बढ़ती है, स्मरण शक्ति बढ़ती है। हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है और इसे अपनाना हमारा कर्तव्य है। इसके साथ-साथ भारत की सभी भाषाएं हमारी विरासत हैं। अत:, हमें कार्यक्षेत्र की प्रांतीय भाषा सीख कर जनमानस के बीच अपने कारोबार की वृद्धि करनी है।

देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं को लागू करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका अहम है, जिसमें केनरा बैंक सदैव अग्रणी रहा है।

राजभाषा एवं सामान्य बैंकिंग कार्यों के कई क्षेत्रों में हमारे बैंक ने काफी महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक पहल की है। किसी भी संस्था की उन्नति का मूल आधार उसके ग्राहक होते हैं। आज ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरुप सेवाएं प्रदान करना नितांत आवश्यक है। आज के इस बदलते डिजिटल परिवेश के दौर में ग्राहक सेवा का स्वरुप भी बदल रहा है। हमारे लिए ग्राहक संतुष्टि सर्वोपरि है। फिनटेक और बैंकिंग सेवाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। बैंकिंग तकनीक फिनटेक का एक हिस्सा बनते जा रही है जिसका उद्देश्य इंटरनेट और प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं आसानी से प्रदान करना है। हमारा बैंक फिनटेक के ज़रिए कारोबार को बढ़ाने और अपने ग्राहकों को अधिक कुशल तरीके से वित्तीय सेवाएं प्रदान करने में अग्रसर है।

जब हम हमारे ग्राहकों को उनकी भाषा में बैंकिंग सेवा प्रदान करते हैं तो हम उनके साथ एक आत्मीय संबंध बनाने में भी कामयाब होते हैं। जिससे बैंक के कारोबार में वृद्धि भी होती है। दिनांक 24 जुलाई, 2023 को घोषित हमारे बैंक के जून, 2023 तिमाही के नतीजे पर आप सभी ने अवश्य नज़र डाली होगी। जिससे यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। इस बार हमारे बैंक का वैश्विक कारोबार ₹20,80,141 लाख करोड़ हो गया है जो कुल 9.38% की वृद्धि है। हमारे बैंक के सकल अग्रिम में 13.27% वृद्धि हुई है और बैंक का निवल लाभ ₹3535 करोड़ रहा है। परिचालन लाभ ₹7,604 करोड़ पर रहा जबकि इसमें 15.11% की वृद्धि दर्ज की गई। बैंक की निवल ब्याज आय में 27.72% की वृद्धि हुई है। यह हमारी मंजिल नहीं हैं, हमें नई आशाओं, नई उमंगों के साथ और भी दूरियां तय करनी है। मुझे पूरी उम्मीद ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि आप सभी इसमें अपना अमूल्य योगदान देंगे।

आइए, हम सब एक साथ मिलकर इस संस्था को आने वाले वर्षों में और भी सुदृढ़ और अधिक सफल बनाने का प्रयास करें। केनरा ज्योति पत्रिका का प्रकाशन एक सकारात्मक एवं सराहनीय प्रयास है, इस पत्रिका के पाठकों एवं संपादन मंडल को हार्दिक बधाई और पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

के. एस. राजु

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

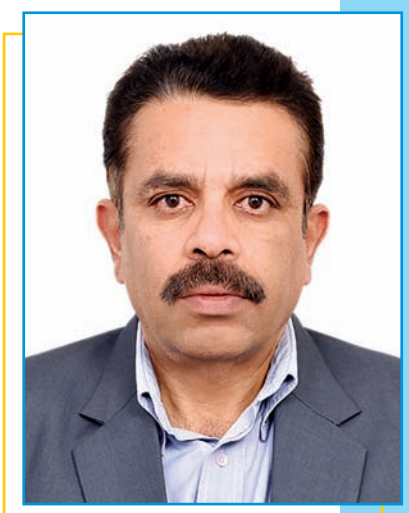

प्रिय पाठकों,

आप सभी को ''केनरा ज्योति'' पत्रिका का 36वां अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। केनरा ज्योति पत्रिका का सिंहावलोकन करने पर हम पाते हैं कि इस दौरान केनबैंक परिवार ने अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से हिंदी में रचनाधर्मिता एवं उसकी गुणवत्ता दोनों को ही सजाया संवारा है। यह महज़ मेरी स्वीकारोक्ति नहीं है, बल्कि केनरा ज्योति ने यह सिद्ध करके दिखाया है। विभिन्न मंचों एवं पाठकों से **'केनरा ज्योति'** को प्राप्त प्रशंसा – पत्र मेरे उक्त कथन की पुष्टि करते हैं।

कहा जाता है **''भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है।''**

भाषा और आत्मा का बड़ा गहरा संबंध है। केवल अपनी भाषा ही भीतरी स्वरूप को समझा सकती है। यही अंतर्संबंध हमारी वास्तविक स्वतंत्रता है।

आइए, साथ मिलकर हिंदी भाषा को कारोबार की भाषा बनाएं और भारत सरकार द्वारा जारी विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को अपनी सर्वोत्तम सेवाओं द्वारा भारत की विभिन्न भाषाओं के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाएं।

कोई भी पत्रिका अपने लेखकों को अपनी आत्मानुभूति तथा ज्ञान का आदान – प्रदान करने का एक सशक्त मंच है। पाठकों को इससे भाषा एवं अपनी कार्यप्रणाली तथा कार्यक्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी प्राप्त होती है। आज पूरा बैंकिंग क्षेत्र उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर है। हमारे कर्मचारीगणों का अपना बहुमूल्य समय कारोबार विकास के गंभीर विषयों पर चिंतन–मनन में गुजरता है। मैं आशा करता हूँ कि केनरा ज्योति का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा। सभी रचनाकारों के सहयोग के बिना पत्रिका प्रकाशन का कार्य संभव नहीं था। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी इसी तरह हमें आपका पूरा सहयोग प्राप्त होता रहेगा और नित्य निरंतर इसके लेखों में उन्नयन होगा। **मैं साधुवाद देता हूँ उन लेखकों को जिन्होंने विभिन्न साहित्यिक विधाओं/रचनाओं में अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया है तथा बैंकिंग विषयों को अपने लेखों में समेटकर अपनी प्रतिभा दिखाई है।**

इस अंक पर भी आपकी अनुभवी दृष्टि हमारा मार्गदर्शन करेगी, इन्हीं अपेक्षाओं के साथ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका,

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

हास्य प्रधान लेख

चाटुकारिता सम्मान समारोह

(देश–विदेश के सभी चाटुकारों से हाथ जोड़कर मन ही मन में क्षमा याचना के बाद यह लेख लिख रहा हूँ)

आशुतोष कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

आजकल किसी भी कार्यालय में कर्मचारियों के चंदे से आये दिन कोई न कोई समारोह आयोजित होते ही रहते हैं। परन्तु इस बार बड़े साहब ने अपनी पोस्टिंग आने से पहले सोचा कि कोई ऐसा समारोह आयोजित करके जाऊं जो इससे पहले कभी न हुआ हो और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बन जाए। तो साहब ने अविलम्ब घोषणा कर दी कि अगले हफ्ते ट्रांसफर से पहले वो एक ''चाटुकारिता सम्मान समारोह'' आयोजित करना चाहते हैं। उनका यह कहना मात्र था कि ऑफ़िस में चाटुकारों की लाइन लग गयी, पर साहब भी बड़े नेक दिल थे। उन्होंने साफ़ कर दिया कि इस सम्मान समारोह का खर्च वह स्वयं वहन करेंगे और इसके बिल का भुगतान ऑफ़िस द्वारा नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्यालय के अपने अंतिम कार्य दिवस में वह स्वयं साल भर तक निरंतर व निश्छल भाव से चाटुकारिता करने वाले सुयोग्य कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित करेंगे। इतना सुनते ही कर्मचारियों में उत्साह और उमंग भर गई। कुछ चाटुकारों की आँखों में आंसू तक भर आये, ''देखा! मैं कहता था न, बड़े साहब की तरह किसी का दिल नहीं है। वो सब देखते हैं कि कौन कितना काम करता है,'' एक चाटुकार ने दूसरे से कहा।

पुरस्कारों की संख्या पांच होगी – ''कर्मठ चाटुकार'', ''विशिष्ट चाटुकारिता मेडल'', ''बेस्ट चाटुकार अवार्ड'', ''अति विशिष्ट चाटुकारिता मेडल'', और ''चाटुकारिता का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड''

जैसे ही यह सर्कुलर ऑफ़िस में सर्कुलेट हुआ कि सभी चाटुकार हरकत में आ गए। आते भी क्यों न! आखिर, प्रतिस्पर्धा भी तगड़ी थी। पर वे, जो चाटुकार नहीं थे वे बेचारे मन मसोसकर उदास थे कि काश! हमने भी थोड़ी बहुत चाटुकारिता या चमचागिरी कर ली होती तो...।

''पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।''

अब तो हर रोज़ ऑफिस में उठते बैठते बस यही चर्चा होती कि बड़े साहब पता नहीं किसको ''बेस्ट चाटुकार अवार्ड'' से सम्मानित करेंगे? साहब किसको ''अति विशिष्ट चाटुकारिता मेडल'' से नवाजेंगे? बड़े साहब किसे ''विशिष्ट चाटुकारिता मेडल'' के लिए चुनेंगे? कौन होगा साहब का ''कर्मठ चाटुकार?'' और बड़े साहब किसे देंगे ''चाटुकारिता का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड''?

लोगों की चर्चा में कभी किसी का नाम अवार्ड लिस्ट में आगे होता तो कभी किसी का, पर आम राय नहीं बन पा रही थी। आख़िर, इतने सारे लोगों ने पिछले कई महीनों और वर्षों में अपना सब कुछ जो झोंक दिया था। कम से कम किसी साहब ने तो सोचा ऐसे नायाब हीरों को पुरस्कृत करने के बारे में। खैर, ऑफ़िस में काम पहले भी नहीं होता था, अब भी नहीं हो रहा है। अब इन पुरस्कारों की घोषणा के बाद जब देखो, जिसे देखो, जिधर देखो, वो बस अलग – अलग अवार्ड की कैटेगरी में विजेताओं की ओपिनियन पोल निकालने में ही व्यस्त दिखता है। सबके अपने – अपने अनुमान, अपनी – अपनी लिस्ट। क्या चाय, क्या लंच, बस हर तरफ यही विषय।

ऐसा नहीं कि बड़े – बड़े साहब ने अपने ऑफ़िस में चाटुकारों को छूट न दी हो। उन्होंने अपने कार्यकाल में किसी कर्मचारी को काम से संबंधित या अवकाश से संबंधित छूट भले ही न दी हो पर चाटुकारों और चमचों को उनकी चाटुकारिता के हिसाब से पूरी छूट दे रखी थी। बड़े साहब भी बड़े खिलाड़ी थे। वह अच्छी तरह जानते थे कि चाटुकारों और खासकर 'विशिष्ट चाटुकारों' को छूट न दी गई तो वो कहीं भी लकड़ी लगा सकते हैं।

वैसे ये वाले बड़े साहब अपने पूर्ववर्ती साहबों से कहीं अधिक व्यावहारिक थे और अपने कार्यालय के चाटुकारों की मानसिकता से बड़ी अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। इसलिए, वे अपने कार्यकाल में काम को अच्छे से मैनेज कर पाएं या नहीं, पर अपने चाटुकारों को बड़े ही बेहतरीन तरीके से मैनेज करते थे। यहाँ तक की उनके जानने वाले भी

कहते थे कि बड़े साहब को चाटुकारों को मैनेज करने की डॉक्टरी उपाधि हासिल है। इसका सर्वोत्तम उदहारण यह रहा कि साहब के कार्यकाल के दौरान हमारे ऑफ़िस के चाटुकारों को कभी इनसे कोई दिक्कत नहीं रही। इन्होंने हर चाटुकार को बड़ी ईमानदारी से उसकी चाटुकारिता के लिए देखा और परखा। बड़े साहब से किसी को शिकायत थी तो सिर्फ उनको जिन्हें चाटुकारिता से एलर्जी थी। उसको लेकर भी साहब ने जाने अनजाने में उन्हें सलाह दी थी कि या तो वो लोग भी अपने अंदर ये सद्गुण ले आएं या अपनी एलर्जी का इलाज करवाएं ताकि ऑफ़िस में खुश रहें, स्वस्थ रहें। इसके लिए यदि उन्हें ऑफ़िस से कुछ दिन दूर रहना हो तो रहें, उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा। पर जब ऑफ़िस वापस आएं तो बाकी चाटुकारों की तरह ही मुस्कराते हुए काम करें।

आख़िर वह ऐतिहासिक दिन आ ही गया जब ऑफ़िस के ठीक बाहर पंडाल लगाया गया। बड़े साहब के सेक्रेटरी सुबह से ही साहब के भक्ति गीत में डूबे हुए थे। क्या गज़ब के गीतों का संग्रह किया था! हर गीत ऐसा कि सुनकर चाटुकारिता की सारी सीमाएं तोड़ दी जाएँ, बिना नतमस्तक हुए कोई पंडाल के अंदर न जा पाए। देखते ही देखते पंडाल कर्मचारियों से भरने लगा। पहली बार आज सारे कर्मचारी एक साथ एक जगह एकत्रित हुए थे। हर कोई चाटुकारिता में एक दूसरे से ज्यादा सजा धजा हुआ कि उसके भार से ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। हर किसी को यही उम्मीद थी कि चाटुकारिता का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड तो बस उसे ही मिलेगा और बाकी लड़ाई तो दूसरे अवार्ड में है।

निर्धारित समय पर बड़े साहब सपत्नी और अपने पालतू कुत्ते के साथ पधारे तो गेट से ही उन्हें बुके देने की होड़ मच गयी। हर चाटुकार में यही होड़ कि पहला बुके वो दे और उसकी माला साहब के गले तक पहले पहुंचे। जिनको चाटुकारिता से एलर्जी थी वो भी आज कतारबद्ध खड़े थे।

साहब के कुर्सी सँभालते ही उनके सेक्रेटरी ने मंच संभाला और बोलना शुरू किया, साथियों! आज बड़ा शुभ दिन है जब हमारे बड़े साहब ने इस कार्यालय में एक नयी परंपरा का शुभारंभ कर हमें अपना आशीर्वाद दिया है। उन जैसा युग पुरुष कोई नहीं। इतना कहते ही पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। हर चाटुकार में एक दूसरे से तेज़ आवाज़ में ताली बजाने की होड़ थी।

अब मंच पर बड़े साहब को आमंत्रित किया गया। अपना कोट-पैंट और टाई सही करते हुए बड़े साहब ने आशीर्वचन देना प्रारम्भ किया, कार्यालय के सभी सम्मानित कर्मचारियों! आप सबको एक साथ यहाँ पहली बार देखकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। एक अधिकारी के रूप में काम तो सभी करते हैं पर अपना कार्यकाल पूरा करके जाने से पहले कुछ ख़ास करके यहाँ से जाया जाए तो उसका मज़ा ही कुछ और है, और उसी सकारात्मक सोच का परिणाम है कि हम सब यहाँ एकत्रित हैं। वैसे चमचे और चाटुकार तो हर युग और हर काल में रहे हैं, भले ही इनका जिक्र वेदों और पुराणों में न हुआ हो। परंतु चाटुकारिता के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उदाहरण हमें सदैव मिलते ही रहते हैं। इनका व्यावहारिक पक्ष अनादिकाल से मजबूत रहा है।

साथियों! एक चाटुकार बड़े अधिकारियों के समक्ष खुद को शुभचिंतक दिखाने की हमेशा भरपूर कोशिश करता रहता है, पर चाटुकार कभी शुभचिंतक नहीं हो सकता। एक चाटुकार मुंह के सामने कुछ और होता है तथा पीठ पीछे कुछ और। उसके पास शब्दकोष की कोई कमी नहीं होती और वो चाटुकारिता के सारे आयाम सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेता है। परंतु शुभचिंतक ऐसे नहीं होते। वो तो बस चुपचाप अपने काम को ही करने में व्यस्त रहते हैं। वो सिर्फ मन से समर्पित रहते हैं जबकि एक चाटुकार तन, मन और धन हर तरह से समर्पित रहता है।

एक चाटुकार दीन ईमान से कोसों दूर एक अत्यंत लालची प्राणी होता है, जबकि एक शुभचिंतक को इनसे कोई सरोकार नहीं होता। यही बातें दोनों को एक दूसरे से भिन्न करती हैं। एक शुभचिंतक जीने का मंत्र होता है, जबकि एक चाटुकार अपने साहब को झूठ-मूठ के दिखावे में ज़िंदा रखने का यंत्र होता है। शुभचिंतक भले ही घरेलु व्यवहार करता हो पर चापलूसी के रंग में चासनी से लिपटा हुआ असली होमली फीलिंग का अहसास तो चाटुकार ही कराता है। इसीलिए चमचा होना या चाटुकार होना बड़े गर्व और साहस की बात है। मेहनत और ईमानदारी से नौकरी तो हर कोई कर लेता है, पर उतनी ही लगन और ईमानदारी से चाटुकारिता करना हर किसी के बस की

बात नहीं। यह अलग बात है कुछ चाटुकारों को दबे स्वर में अपने साहबों को गाली देते हुए और अकेले में तिल-तिल कर मरने का भी कभी-कभी अहसास होता है, पर वो चाह के भी अपना स्वाभाव नहीं त्याग पाते। ऐसे शालीन चाटुकारों को मेरा सादर प्रणाम। मित्रों! चाटुकारिता सबके बस का काम नहीं। सब कुछ अपने आराध्य के चरणों में न्योछावर करके साहब के दिल और दिमाग में जगह बनाना आसान काम नहीं होता। खिसियाते हुए, दांत निपोरते हुए, आगे पीछे गिरते पड़ते हुए, सबके सामने चार जूते खाने के बाद भी मंद-मंद मुस्कराते हुए हद से पार जाना ही चाटुकारिता है। जिसने ये कर लिया मानो उसने अमृतपान कर लिया।

चाटुकार बड़े ही रंगीन होते हैं, इतने कि गिरगिट भी शरमा जाए। इनके पास ऐसी सम्मोहन कला होती है कि शायद ही कोई अधिकारी इनसे बच पाए। पहले कुछ दिन तो यह साहब के इशारे पर नाचते हैं और कुछ समय बाद कब अपने धर्म-कर्म से अपने साहबों को अपनी उँगलियों पर नचाने लगते हैं, पता ही नहीं चलता और कब ये ऑफिस से घर कि दहलीज तक पहुँच जाते हैं कोई नहीं जान पाता। खैर, ''जो अपने साहब के लिए दिन रात इतना मरता हो, इतनी क़द्र करता हो उसे तो सम्मानित और अलंकृत होना भी चाहिए।'' मैं अपनी वाणी को यहीं विराम दूंगा क्यूँकि आप सभी के चाय समोसे भी ठंडे हो रहे हैं। आइए, सम्मान समारोह का कार्यक्रम आगे बढ़ाया जाए।

सबसे पहले पुरस्कार की श्रेणी है ''कर्मठ चाटुकार'' की। और यह पुरस्कार दिया जाता है श्रीमान ''कख'' को जिन्होंने दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा। एक पैर पर खड़े रहकर अपनी कर्मठ चाटुकारिता से इन्होंने ऑफिस में हर किसी कर्मचारी के लिए हमेशा

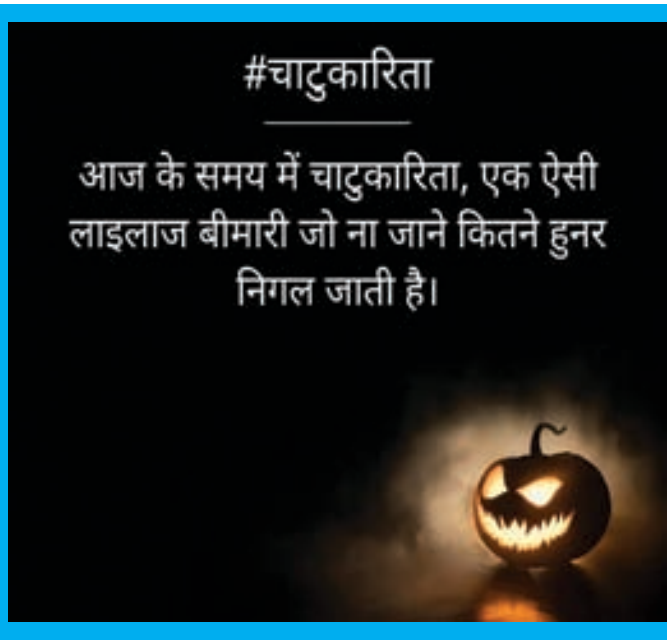

एक उदाहरण प्रस्तुत किया। देखते ही देखते पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। ''कख'' अपने अन्दाज़ में आधे झुके हुए मंच पर चढ़े और पुरस्कार ग्रहण किया।

अगली श्रेणी है ''विशिष्ट चाटुकारिता मेडल'' की। यह सुनते ही हॉल में खुसर-फुसर शुरू हो गयी क्यूँकि पुरुष और महिला दोनों ही वर्ग में काफी कठिन प्रतिस्पर्धा थी। खैर, यह पुरस्कार दिया गया श्रीमान ''गघ'' को जिहोंने सिर्फ एक नहीं बल्कि पिछले लगातार तीन कार्यकाल एक ही कार्यालय में बिताए थे और चाटुकारिता के नए स्तम्भ स्थापित किए थे। उनका नाम जैसे ही घोषित हुआ वो दूर कोने से अपने खुशी के आंसू पोछते हुए वहीं से हाथ जोड़े हुए मंच पर आकर अपना पुरस्कार ग्रहण करते हैं। समस्त कर्मचारीगण उनके इस व्यवहार पर तालियां बजाने से खुद को न रोक सके।

तीसरी श्रेणी ''बेस्ट चाटुकार अवार्ड'' के लिए जैसे ही नाम लिया जाने वाला था कि चार महानुभाव एक साथ उठ खड़े हुए। अरे, यह क्या! यह तो बड़ी ही दुविधाजनक स्थिति उत्पन्न हो गई। उन चारों के लिए थोड़े बहुत नारे भी लगने लगे। बड़े साहब भी अपनी हंसी न रोक पाए, किन्तु स्थिति को संभालते हुए उन्होंने घोषणा की कि यह पुरस्कार दिया जाता है श्रीमान ''चछ'' को जिन्होंने साल भर न सिर्फ अपने ऑफिस के बड़े साहब कि चाटुकारिता में कोई कमी छोड़ी बल्कि अपने संगठन के अन्य ऑफिसों से आये हुए आंगतुक अधिकारियों पर भी अपनी चापलुसी और चाटुकारिता की अमिट छाप छोड़कर एक अद्भुत मिसाल पेश की है।''चछ'' बिलकुल दंडवत की मुद्रा में आकर सबसे पहले बड़े साहब के पैरों पर लेट जाते हैं, फिर स्टेज पर आकर अपना पुरस्कार ग्रहण करते हैं। अविस्मरणीय पल था यह!

अब तो सिर्फ दो पुरस्कारों की श्रेणियां बची थी और लोगों में कौतुहल बढ़ता ही जा रहा था। अगली श्रेणी ''अतिविशिष्ट चाटुकारिता मेडल'' के लिए नाम बुलाया जाने ही वाला था कि बड़े साहब की मेमसाहब ने टोकते हुए कहा कि यह नाम मैं पुकारूंगी। भला साहब की इतनी हिम्मत कि वो मैडम की बात काट सकें। मुस्कराते हुए उन्होंने माइक मेमसाहब की तरफ कर दिया। मेमसाहब ने जैसे ही श्रीमान ''टठ'' का नाम लिया पूरे हॉल में सन्नाटा फैल गया। किसी को इस नाम पर यकीन ही नहीं हो रहा था। हालाँकि वो ज़बरदस्त चाटुकार और चापलुस थे पर ऑफिस में उनसे भी बड़े-बड़े सूरमा बैठे थे। लेकिन जब मेमसाहब ने उन महाशय की भूमिका बाँधी तो लोगों ने दांतों तले उंगलियां दबा ली। उन्होंने कहा, श्रीमान ''टठ'' सिर्फ ऑफिस तक ही बड़े साहब के साथ नहीं लगे रहते थे बल्कि ऑफिस जाने से पहले मेमसाहब के लिए सब्ज़ी, दूध और राशन ले आना तथा ऑफिस के बाद जब सभी लोग अपने घर चले जाते थे, तो साहब

और मेमसाहब की दवाइयां घर पहुंचाना, इन्हें सबसे अलग करता है। यहाँ तक की बच्चों को स्कूल भी छोड़ना हो और अगर घर में कोई न हो तो ये महोदय अपनी गाड़ी से वो काम भी मुस्कराते हुए करते थे। ऑफिस का काम करने के लिए तो बहुत लोग हैं पर जो घर भी संभाल ले, उसे तो पुरस्कृत करना बनता है और यही आते हैं ''अतिविशिष्ट'' की श्रेणी में। मैडम के इतना कहते ही पंडाल में सभी लोगों ने खड़े होकर तालियां बजायीं और श्रीमान ''टठ'' पहले आकर मैडम के चरण पादुका को प्रणाम करते हैं फिर बड़े साहब को। घुटने के बल अपने अवार्ड को ग्रहण करके उन्होंने आज अपनी चाटुकारिता का एक और बेजोड़ नमूना प्रस्तुत किया तब जाके मंच से उतरे।

आखिर वो यादगार लम्हा भी आ ही गया जिसका इंतज़ार सभी कर्मचारियों को न जाने कब से था, सम्मान समारोह के आख़िरी श्रेणी की - चाटुकारिता का ''लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड''। बड़े साहब ने बताया, साथियों! इस श्रेणी में चुनाव करना सबसे कठिन था क्यूँकि मुझे सिर्फ अपने कार्यकाल के स्टाफ को नहीं देखना था, इसलिए मुझे अपने कार्यकाल से पहले के भी अधिकारियों के दौर की फ़ाइलें, फोटोग्राफ और वीडिओज़ ढूंढने पड़े, देखने पड़े ताकि सही व्यक्ति को सबसे उपयुक्त पुरस्कार मिले। मुझे बताते हुए बहुत फ़क्र महसूस हो रहा है कि जिस नाम को मैं आप सभी के समक्ष अब पुकारने जा रहा हूँ आप भी उनसे सहमत होंगे। और यह पुरस्कार दिया जाता है हमारे कार्यालय के एक अति वरिष्ठ चाटुकार श्रीमान ''दध'' को जिन्होंने जवानी से लेकर अब तक अपनी सारी उम्र चाटुकारिता और चमचागिरी की पराकाष्ठा में अर्पण कर दी। जिन्होंने हर बड़े साहब की खातिरदारी, उनके ऑफिस और घर परिवार के साथ-साथ रिश्तेदारों-नातेदारों तक की चापलूसी में कोई कसर नहीं छोड़ी और निष्ठाभाव से निरंतर अपने चापलूसी भरे कर्तव्यों का निर्वहन किया वो सबसे ज्यादा उपयुक्त हैं इस अवार्ड के लिए। बड़े साहब के इतना कहते ही पूरे पंडाल में सभी लोगों ने श्रीमान ''दध'' को स्टैंडिंग ओवेसन दिया। इन महानुभाव ने भी किसी को निराश नहीं किया। सभी का अभिवादन किया, फिर मंच की ओर बढ़े, सबसे पहले बड़े साहब के पालतू कुत्ते से हाथ मिलाने की कोशिश की भले ही कुत्ते ने कोई भाव नहीं दिया। फिर मेमसाहब के चरण छुए और बड़े साहब को साष्टांग चरण स्पर्श किया, उनके जूते चूमे और तब पुरस्कार ग्रहण करके मंच से नीचे उतरे। उम्र के इस पड़ाव पर आकर चाटुकारिता की मुस्कराहट भरी भाव भंगिमा कोई इनसे सीखे। सचमुच आज हर कोई धन्य हो गया था।

तत्पश्चात सभी सम्मानित कर्मचारीगण एक दूसरे को बधाई देते रहे। फिर बड़े साहब ने कहा, साथियों! आज का यह ऐतिहासिक चाटुकारिता सम्मान समारोह यहीं संपन्न होता है। सभी सम्मानितों को एक बार फिर से ढेरों बधाइयां। जिन लोगों को पुरस्कार नहीं मिल सका वो निराश न हों, अपना सार्थक प्रयास जारी रखें। याद रखिये, ऑफिस के काम हर कोई आता है, कभी साहब लोगों के काम आइये, तभी जीवन आनंदमय होगा। भले आप मुझे गालियां दो, बुराई करो, पर जो मज़ा चाटुकारिता में है वो किसी अन्य काम में नहीं। आप सभी चाटुकारिता की मंज़िल पर निरंतर बढ़ते रहिए और नित नए-नए कीर्तिमान स्थापित कीजिए यही मेरी कामना है।

धन्यवाद।

कविता

माँ की लोरी

धीरज कुमार
प्रबंधक
बोंडागाँव शाखा

माँ..... एक लोरी सुना दे,
मुझे नींद नहीं आ रही!
थक गया हूँ मैं...
माँ एक लोरी सुना दे!

कभी खुद के सपनों का बोझ,
कभी बोझ, दूसरों के सपनों का....
कभी पैर में पड़ी, काम की बेड़ियाँ समझ कर !
कभी खुद में ही उलझा पड़ा मैं..
मुझे नींद नहीं आ रही....
थक गया हूँ मैं
माँ एक लोरी सुना दे !

हाथों में कलम...
कागज़ पर ख्याल मुश्किल है !
दिल में टीश, पर बयाँ - ए - हाल मुश्किल है....
है जवाब कई रंग, कई रूप, कई चाल - ढाल के !
पर उन जवाबों के..... एक मिसाल मुश्किल है !
थक गया हूँ मैं
माँ एक लोरी सुना दे!

बचपन में थकान से, तेरे आंचल की छाँव!
लड़खड़ाते कदमों से गिरने पर, तेरे उंगलियों का साथ....
बचपन में, थकान से तेरे आंचल की छाँव!
लड़खड़ाते कदमों से, गिरने पर, तेरे उंगलियों का साथ....
आज फिर वो आंचल, वो उंगलियों की फिज़ा दे - दे!
थक गया हूँ मैं.....
माँ.....!
एक लोरी सुना दे!

कविता

बचपन

नरेन्द्र देव पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

वो माटी की खुशबू, वो चांदनी रातें।
वो मैया का आँचल, उसकी प्यारी बातें।
घड़ी भर का रोना, और फिर खिलखिलाना,
कुछ अपनी शैतानी, फिर पिताजी की डांटें।

कोई मोल ले कर समय का पहिया घुमा दे,
मुझे ऐ ज़िंदगी, फिर से बच्चा बना दे।

वो जाड़े का मौसम, खेतों में सरसों लहलहाते।
जो देखे मुझे पगडंडियों पर आते- जाते।
फिर गौरैयों के पीछे बेतहाशा भाग जाना,
कभी फिर मिट्टियों के घरौंदे बनाते।

कोई मोल ले कर समय का पहिया घुमा दे,
मुझे ऐ ज़िंदगी, फिर से बच्चा बना दे।

बाबू के कंधे से पूरी दुनिया देख आते।
मिठाइयों के नाम पर थे मीठे बतासे।
अजब सा गज़ब सा था अपना बहाना,
जो माँ दुलारे छोटे को, तो हम रूठ जाते।

कोई मोल ले कर समय का पहिया घुमा दे,
मुझे ऐ ज़िंदगी, फिर से बच्चा बना दे।

आलेख

वैश्वीकरण बनाम क्षेत्रीय एकीकरण

गणेश प्रताप गुजर
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे-II

आज दुनिया करीब आ रही है। कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय सीमाएं समाप्त हो रही हैं। राज्यों की दूसरे राज्यों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। संचार और प्रौद्योगिकी तेज गति से आगे बढ़ रही हैं। यही कारण है कि आज हम एक विश्वग्राम में हैं। यह रुझान परस्पर विश्व अर्थव्यवस्था की ओर अधिक निर्भर है। विश्व अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हो रहा है जिसमें देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं का उदारीकरण कर रहें हैं और विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकृत हो रहें हैं। देशों की अर्थव्यवस्था में परस्पर सहयोग बढ़ रहा है जो राष्ट्रों की बाधाओं को तोड़ रहा है। लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण क्षेत्रीय आर्थिक अवरोधों का उभरना भी है जो वैश्वीकरण के मार्ग में बाधा बन रहा है।

हाल के वर्षों में वैश्वीकरण क्यों बढ़ा है?

अब प्रवृत्ति वैश्वीकरण की ओर है क्योंकि संरक्षणवादी नीतियां लाभदायक नहीं रही हैं। विश्व व्यापार में गिरावट आई है। आर्थिक गतिविधियां कम हो गई हैं। साथ ही साम्यवादी और राज्य नियंत्रित समाजवादी व्यवस्था के अधीन अर्थव्यवस्थाएँ बुरी तरह विफल रहीं हैं। शीत युद्ध की समाप्ति के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के

आदर्शीकरण ने वैश्वीकरण प्रक्रिया को गति दी है। जो देश सामाजिक लागत को कम करने और लाभ को बढ़ाने में सफल रहे हैं, उन्होंने उच्च विकास दर और उच्च जीवन स्तर प्राप्त किया है, जबकि भारत जैसे देश इसमें असफल रहे हैं, वे पिछड़ गए हैं । लेकिन जब से भारत 1991 में अपनी नई आर्थिक नीतियों के माध्यम से वैश्वीकरण प्रक्रिया में शामिल हो गया, तब से चीजें बेहतर हो गईं हैं जैसे पोर्टफोलियो निवेश के साथ-साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ा है, भुगतान संतुलन की स्थिति में सुधार हुआ है, व्यापार में सुधार हुआ है। अब यह रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता की राह पर है।

यदि वैश्वीकरण में कुछ खूबियाँ हैं, तो वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक तथ्य भी हैं। अब हालत यह है कि कोई भी देश वैश्वीकरण का विरोध नहीं कर रहा है। यह आर्थिक मामलों में देशों की स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्तियों को छीन रहा है। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों पर आर्थिक प्रभुत्व की व्यवस्था अपनायी जा रही है। बाल श्रम, मानवाधिकार, व्यापार के लिए भावनात्मक सुरक्षा के संदर्भ में गंभीर शर्तें लगाई जा रही हैं। बाजार अर्थव्यवस्था की प्रेरक शक्ति संचयी प्रवृत्ति है जो मूलतः मानवीय लालच है। कई लोगों का मानना है कि जब तक इस अधिग्रहण प्रवृत्ति पर कुछ सीमा नहीं लगाई जाती है, तब तक आने वाली सदी में दुनिया वैश्विक बाजारों को साझा करने को लेकर संघर्षों में उलझी रहेगी ।

विभिन्न क्षेत्रीय आर्थिक समूहों का उद्भव

लेकिन वैश्वीकरण प्रक्रिया के सामने सबसे बड़ी समस्या क्षेत्रीय आर्थिक समूहों का उद्भव है जो आर्थिक मामलों में क्षेत्रवाद को बढ़ावा दे रहा है। **यूरोपीय संघ** मजबूत हो रहा है। यूरोपीय संघ दुनिया के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक समूह में से एक है। इसकी एक मुद्रा है जिसका अन्य देशों को इस संघ के साथ व्यापार

कराते समय उपयोग करना पड़ता है। यूरोपीय संघ एक मजबूत अर्थव्यवस्था है और वे व्यापार में शर्तें तय करते है जिससे सबसे कम विकसित देशों खासकर एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के गरीब देशों को सबसे अधिक नुकसान होता है ।

आसियान अन्य क्षेत्रीय आर्थिक समूह है। व्यापार और नए बाजारों और निवेश गंतव्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए क्षेत्र में आर्थिक सहयोग में सुधार की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। वे बेहतर आर्थिक गतिविधियों के लिए अपनी अर्थव्यवस्थाओं को आधुनिक बनाने, कम्प्यूटरीकृत करने की कार्य योजना पर कार्य कर रहे हैं। वे क्षेत्रीय एकीकरण की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं। वे पहले ही म्यांमार, लाओस और वियतनाम को शामिल कर चुके हैं। भारत को पूर्ण परामर्शदाता सहयोगी बनाया गया है और आसियान क्षेत्रीय मंच में शामिल किया गया है। इसलिए भारत की 'पूर्व की ओर देखो' नीति के माध्यम से इसका महत्व बढ़ गया है ।

उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार संघ और **सार्क** अन्य आर्थिक समूह हैं जो क्षेत्रीय प्रकृति के हैं। सार्क 2001 से दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र के गठन में तेजी लाने की दिशा में सभी प्रयास कर रहा है। यह टैरिफ और व्यापार बाधाओं को दूर करने की दिशा में भी कार्य कर रहा है। मुक्त व्यापार और बाजार एवं निवेश को उदार बनाने के लिए एक अन्य आर्थिक समूह **एशिया–प्रशांत आर्थिक सहयोग** सक्रिय है। एक अन्य संगठन **इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन फॉर रीजनल को–ऑपरेशन** का गठन 1997 में किया गया था जिसका सदस्य भारत भी है। यह व्यापार के लिए बहुत संभावित क्षेत्र है और इसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना है। यह क्षेत्र धन और तेल से बहुत समृद्ध है। इसलिए आने वाले वर्षों में व्यापार और आर्थिक सहयोग के लिए पूरा ध्यान इसी क्षेत्र पर केंद्रित होने वाला है।

क्षेत्रीय आर्थिक समूहों की प्रमुख समस्याएं

इन क्षेत्रीय आर्थिक समूहों के साथ मुख्य समस्या यह है कि इनमें सदस्यता का अतिव्यापन होता है। एक देश कई आर्थिक समूहों का हिस्सा होता है। लेकिन यह अन्य समूहों का सदस्य बनकर भी अपने हितों को बेहतर तरीके से हासिल कर सकता है। संरक्षणवादी नीतियों को अपनाकर भी क्षेत्रीय अवरोध वैश्वीकरण की प्रक्रिया के लिए खतरा और बाधा बन सकते हैं। इसके अलावा, वे केवल अपने ही क्षेत्र के बारे में सीमित सोच रखने के कारण अपनी नीति में अदूरदर्शी हो सकते हैं। वे विश्व व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सीमित कारक हो सकते हैं, हालांकि वे मुक्त व्यापार और बाजार पहुंच का प्रचार करते हैं।

निष्कर्ष

तो वैश्वीकरण और क्षेत्रीय एकीकरण की ये प्रक्रिया आज दुनिया में समांतर चल रही है। दोनों एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं लेकिन समस्याएं बहुत हैं। मूल उद्देश्य आर्थिक विकास है लेकिन रास्ते अलग–अलग हैं। यदि विकसित देशों का रवैया सहायता और किफायती मूल्यों पर प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के मामले में विकासशील देशों के प्रति नहीं बदलता है, तो क्षेत्रीय समूह अधिक संख्या में बनेंगे। लेकिन यदि वे अपने दृष्टिकोण में आत्म–केंद्रित हो जाते हैं और संरक्षणवादी नीतियां अपनाते हैं तो विश्व व्यापार को नुकसान होगा और इसका असर सभी देशों पर पड़ेगा। इसलिए विकसित देशों की अधिक ज़िम्मेदारी है कि वे गरीब देशों को आर्थिक विकास में सहायता करें।

व्यक्ति अपने विचारों से
निर्मित प्राणी है,
वह जो सोचता है वही बन जाता है।

– महात्मा गांधी

यात्रा वृत्तांत

यात्रा वृत्तांत : भारत के शक्ति केंद्र से भौगोलिक केंद्र तक

गौरव जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, नागपुर

एक बार फिर बैंक ने मुझे और मेरे परिवार को एक और मौका दिया एक नए शहर, नागपुर को जानने का, हम लोगो ने ये निश्चय किया कि दिनांक 02 जून, 2023 को हम अपनी यात्रा सड़क मार्ग से गाज़ियाबाद स्थित अपने निवास से शुरु करेंगे। दिनांक 01 जून, 2023 को हमारे घर का समान सकुशल ट्रक में चढ़ने के बाद हमने अगले दिन दिनांक 02 जून, 2023 की सुबह 08:00 बजे यात्रा प्रारम्भ की। इस यात्रा में मेरे साथ मेरी पत्नी और मेरा 2 वर्षीय पुत्र भी था। हमारे गाज़ियाबाद निवास स्थल से नागपुर की दूरी कुल 1070 किलोमीटर है, जिसको हम लोग दो भागों में पूरी करने वाले थे। पहले भाग में हम लोग गाज़ियाबाद से झाँसी तक की दूरी जो कि 480 किलोमीटर है, वह पूरी करते और अगले दिन दिनांक 03 जून, 2023 को झाँसी से नागपुर तक की दूरी तय करते जो कि 590 किलोमीटर की है ।

02 जून, 2023

मन में उत्साह और अपनी कार को पूरी तरह समान से ऐसा भर कर कि एक व्यक्ति की भी जगह शेष न बचे, हम निकल पड़े अपनी अभी तक की सबसे लंबी सड़क यात्रा पर। एक रात पहले ही हम पति-पत्नी ने ये निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए हम 06:00 बजे निकल ही जाएंगे। अतः हम अपने 2 साल के बालक के साथ निर्णय अनुसार लगभग 08:00 बजे घर से निकल ही गए।

प्रातः 09:30 बजे हम यमुना एक्सप्रेस हाइवे पर चढ़ चुके थे और घर से निकलते ही कुछ दूर चलते ही, हमारे पेट ने किलकारी मारनी शुरू कर दी और हम एक्सप्रेस हाइवे पर बने हुए अत्यधिक महंगे फूड जोइंट्स की पार्किंग लॉट में अपनी कार लगा कर अपने घर से लाए आलू-पूरी का आनंद लेने लगे। वहाँ खड़े गार्ड ने कुछ देर तो मैडम-सर के निकलने का इंतजार किया फिर हमारे आलू- पूरी देख कर वो भी शायद समझ गया कि भैया-भाभी बचत मोड में हैं। अंततः पेट पूजा के बाद हमारा सुहाना सफ़र शुरू हुआ और अति सुंदर यमुना एक्सप्रेस हाइवे से होते हुए हम करीब 01:00 बजे तक आगरा पार कर चुके थे। यमुना एक्सप्रेस हाइवे से अब हम आ चुके थे एनएच44 पर, जो कि देश का सबसे लंबा हाइवे है। जैसा कि प्रारम्भ से ही हमारा मेन फोकस खाना और समय पर खाना रहा था, हमने निश्चय किया था कि 02:00 बजे के आस पास हम किसी अच्छे होटल या ढाबे पर रुक कर दोपहर का भोजन कर लेंगे। समय व्यतीत करने के लिए हमने एक स्पोटिफ़ाई जोकि (एक म्यूज़िक प्लैटफ़ार्म) से महाभारत सुनना शुरू किया और क्या दिलचस्प वर्णन किया है विजय राज जी ने ऐसा लग रहा था कि सब कुछ अपनी आँखों से ही देख रहा हूँ। आँखों से तो खैर और भी चीज़ें देखते हुए जा रहे थे, कई छोटे-छोटे गाँव भी हैं इस हाइवे पर और नाम भी हैं काफी विशिष्ट जैसे की सैयां, मनिया, बीछिया और भी कई। सैयां गाँव से थोड़ा आगे चलते हुए जैसे ही हमने 'गंभीर नदी' की किसी सहायक नदी को पार किया, हम राजस्थान की सीमा में प्रवेश कर गए और कुछ 30 किमी की दूरी तय करते हुए 'केसरिया बालम' गुनगुनाते हुए धौलपुर से थोड़ा आगे चंबल नदी के पुल को पार करते हुए हम मध्य प्रदेश की सीमा में प्रविष्ट हुए। हाइवे पर बने गाँव के सूचना पटलों, जिन पर संबंधित गाँव का पूरा ब्यौरा दिया हुआ था, को पढ़ते-पढ़ते पत्नी जी ने प्रश्न किया कि कौन रखता होगा ये नाम, कौन बसाता होगा ये गाँव? कितने छोटे-छोटे गाँव हैं न 300-500 की आबादी वाले, यहाँ तो सब एक-दूसरे को जानते होंगे?'' फिर वो अपने गाँव का वर्णन करने लगी। कुछ दूरी हमने आगे किसी अवरोध के चलते, हाइवे को छोड़ कर गाँव के कच्चे रास्ते पर भी पार की। इन गाँव के घरों में झाँकते झाँकते हमने पाया की एक चीज़ तो उभय-निष्ठ है सभी गाँव की, पता है क्या? 'सुकून', जिसकी तलाश में हम कैलाश भी जाने को तैयार हैं वो यहीं है, बशर्ते हम तैयार हों अपने मन को बांध कर रखने के लिए, तभी संयोगवश हमारी महाभारत की पॉडकास्ट में यक्ष प्रश्न हुआ कि हवा से भी तेज चलने वाला कौन है? और हम पति-पत्नी युधिष्ठिर से भी पहले चीख पड़े ''मन'' और ऐसे खुश हुए जैसे कौन बनेगा करोड़पति के आखिरी सवाल का जवाब दे दिया हो, खैर हुआ तो कुछ भी नहीं। हम बस चले जा रहे थे इधर-उधर कोई ठीक-ठाक ढाबा ढूंढते हुए, वापस से एनएच44 पकड़ चुके थे। चलते-चलते

03:00 बज चुके थे और भूख के मारे पेट दहाड़ें मार रहा था और पत्नी ताने। अब हमारे उस मित्र का भी फोन आना शुरू हो गया, जिसके यहाँ झाँसी में हम आज रात रुकने वाले थे, ये मित्र सेना में बहुत ऊंची पोस्ट पर तैनात है और मेहमान नवाज़ी के भी काफी शौकीन हैं। हमने उन मित्र को बताया कि अभी हम ग्वालियर से गुज़र रहे हैं दोपहर का भोजन करेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे, ये कहने का एक कारण पत्नी जी को ये आश्वस्त करना भी था कि बस अभी रुकेंगे खाने के लिए। लेकिन दांव उल्टा पड़ गया, उन मित्र ने उधर से मजे लेते हुए स्पीकर फोन पर कहा कि रास्ते में कोई ढंग का ढाबा नहीं है जहां आप बीवी बच्चों के साथ रुके, सीधे ही चले आइए। अब तो मुझे लग रहा था कि धरती फट जाए और सीता माँ के पहले मैं उसमें घुस जाऊँ, लेकिन ये तो कलियुग है न, तो धरती नहीं लेकिन पत्नी जी मुझ पर फट पड़ी, ये वो नहीं उनका डर बोल रहा था जो उनको हमारे पीछे अपनी बेबी-सीट पर सो रहे 2 वर्षीय बॉस से लग रहा था, कि सोते सोते थक चुके मालिक को भागने-दौड़ने के लिए ब्रेक नहीं मिलेगा तो क्या हाल करेंगे वे हमारा। ढूँढने पर तो भगवान भी मिल जाते हैं बस एक ढाबा कहीं से प्रकट हो जाए ये ही सोचते-सोचते मैं चले जा रहा था, महाभारत सुनाते हुए विजय राज जी को भी चुप कर दिया गया था कि कहीं द्रौपदी पर हुए अत्याचार का हिसाब भी मुझे ही न देना पड़ जाए, तभी अचानक एक फ़ैमिली ढाबे के आगे यूपी14 की कार खड़ी दिख गयी और बस मैंने आनन-फानन वहीं कार लगाई और हम पति पत्नी, बालक सहित कूदते हुए अंदर चल दिए, इतना चलने के बाद गाज़ियाबाद की गाड़ी देख कर यह आश्वासन तो था कि ठीक-ठाक जगह ही होगी। जगह ठीक-ठाक ही निकली, ऐसी की मरता क्या न करता को सजीव अनुभव किया हमने और वो यूपी14 की कार जिसको देख कर हम रुके थे, उसके यात्री न जाने किस समानान्तर दुनिया में प्रवेश कर गए की दिखे ही नहीं। भोजन कर के अपने बॉस को थोड़ा भागने-दौड़ने और खेलने का मौका देने के बाद हम निकल पड़े मध्य प्रदेश का अनुभव ले कर फिर से उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर झाँसी में अपने आज के पड़ाव के लिए जहां हमारे परम मित्र जो कि पत्नी जी के भी अच्छे मित्र हैं और उनके स्वभाव से भली-भांति परिचित हैं, खीसे नपोरे हमारा इंतज़ार कर रहे थे।

शाम 05:30 बजे हम इस ऐतिहासिक नगर झाँसी पहुंचे जहां की रानी लक्ष्मीबाई की बहादुरी से हम सभी भली भांति परिचित हैं, पाहुज नदी के किनारे बसे इस शहर में घुसते ही कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की वो पंक्तियाँ याद आ गयी,

बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

पत्नी जी ने अपने बचपन में सुनी हुई एक वीर रस से भरी कविता और सुनाई जो इस प्रकार थी,

गूंज रही है हल्दी घाटी घोड़ों की इन ठापों से,
वीरों की एक सेना ले कर राणा लड़ता मुगलों से,
हाथी पर सलीम है, चेतक पर राणा है,
देखो चेतक हाथी के मस्तक पर चड़ गया,
टप टप टप टप टप टप टप टप टप छू....''

इस पर हमारे बॉस ने भी पीछे से आलाप लिया छू ऊउ उ..... और माहौल वीर रस से हास्य रस में बदल गया; और हँसते-खेलते झाँसी के प्रसिद्ध रेलवे फाटक पर आधा घंटा खड़े हो कर सभी प्रकार की रेल गाड़ियों के निकल जाने के पश्चात हम अंततः अपने प्रिय मित्र के निवास स्थान पर करीब 06:00 बजे पहुँच चुके थे। फ़ौजियों की मेहमान नवाज़ी होती तो कमाल की है, मित्र ने बहुत पहले से ही ढिंढोरा पीट रखा था कि आओगे तो एकदम बिना मिलावट वाला भैंस का दूध पिलाएंगे अपने भतीजे को। पूरे रास्ते की थकान इस बबीना कैंट की खूबसूरती को देख कर उतर गयी, पूरी तो नहीं फिर भी हाँ! इतनी फुर्ती तो आ गयी थी कि अपने मित्र और परिवार के साथ कुछ सुकून के पल गुज़ार लिए, वही सुकून जिसके लिए कैलाश जा रहे थे। बहुत जल्दी तो नहीं लेकिन हाँ जल्दी सो गए क्योंकि अभी तो 480 किलोमीटर ही पार हुआ था, कल का 590 किमी का रास्ता तय करना तो अभी बाकी था।

03 जून, 2023

सुबह सवेरे 07:00 बजे उठकर हमेशा की तरह पति पत्नी 08:00 बजे निकलने का समय निर्धारित कर के प्रातः 09:00 बजे अच्छे से नाश्ता करके और रास्ते के लिए खाना बाँध के अपने गंतव्य स्थान नागपुर की ओर निकल चुके थे। हम नागपुर जा कर अपने मित्र के सुझाए हुए एक होमस्टे में रुकने वाले थे, जहां का उनका खुद का अनुभव भी बहुत अच्छा रहा था और होमस्टे के मालिक उनके परिचित थे। हमने

चलने के पहले उन सज्जन को अपनी योजना बता दी की हम शाम के लगभग 06:00 बजे वहाँ पहुँच जाएंगे, उन सज्जन ने भी उत्साहित हो कर हमारे खाने पीने की सारी जरूरतें पूछ लीं।

अपने मित्र से खुशी-खुशी विदा ले कर थोड़े ही समय में बेतवा नदी को पार करके फिर से हम एनएच44 पर आ गए और उत्तर प्रदेश से फिर मध्य प्रदेश में प्रवेश किया, ये उत्तर से मध्य और मध्य से उत्तर प्रदेश में कूदने फादने में हमने एक चीज़ नोटिस की कि प्रदेश बदलने के साथ साथ वहाँ का फ्लोरा अर्थात वनस्पति भी बदल रही थी, जैसे कि उत्तर प्रदेश में सड़क किनारे आपको नीम, पीपल के पेड़ ज्यादा दिखेंगे, बल्कि मध्य प्रदेश में सड़क किनारे बबूल का पेड़ बहुतायत में दिख रहा था और साथ में कीकर भी। सुबह 09:00 बजे निकल कर हम 10:00 के आस पास ललितपुर पहुँच गए, जहां गोविंद सागर बांध भी स्थित है जो कि भारत के पुराने बांधों में से एक है। हमने झाँसी से निकल कर मध्य प्रदेश के सागर में दोपहर के भोजन के लिए रुकने की योजना बनाई थी जो की झाँसी से करीब 200 किमी है परंतु हुआ वही जिसका हमें डर था, कल की तरह आज भी कोई ठीक-ठाक सा होटल रास्ते में नहीं मिला परंतु इस बार चटोरे पति पत्नी इंतेजाम ले कर आए थे। बीच के नाश्ते के बाद भी लंच अलग से सागर के किनारे, वह 'सागर' नहीं , सागर जिले के किनारे बबुल के पेड़ के नीचे कार लगा कर खूब गप्पे मारते हुए लंच किया और फिर चल पड़े अपने प्यारे एनएच44 पर। इतने में 01:00 बज चुका था कि तभी वे सज्जन जिनके होमस्टे में हम नागपुर में रुकने वाले थे उनका फोन आया की कहाँ पहुंचे, तो हमने बताया कि अभी सागर से निकले हैं, तो अनुमान लगा की 7:30 बजे तक पहुँच जाएंगे, सज्जन ने कहा कि उनका जो नौकर खाना बनाता है वो 07:00 बजे एक चला जाएगा तो आप अभी बता दें कि क्या खाएँगे, पत्नी जी ने कूद कर कहा पनीर! उधर से सज्जन बोले मटर पनीर ठीक रहेगा? अब तो मेरे भी मुँह में पानी आया कि हाँ हाँ बिलकुल, सज्जन उधर से बोले की ठीक है, अच्छा जब आप पेंच नेशनल पार्क पहुँच जाए तब कॉल करिएगा, मैं आपको सही लोकेशन दे दूंगा हमने संदेह भाव से पूछा सही लोकेशन? जो पहले दी है वो गलत है क्या? तो उन्होंने हंस कर टालते हुए कहा कि अरे नहीं नहीं, ये गूगल मैप भी ना! हमारा होमस्टे झील के इस ओर है और ये दूसरी तरफ दिखाता है, कोई नहीं जब आप पेंच नेशनल पार्क पहुँच जाए तब बताइएगा, मैं पनीर और रोटी बनवा कर तैयार रखता हूँ 'हम भी आश्वस्त हो गए कि कोई बात नहीं ऐसा तो हो ही जाता है। आज हमारे साहबज़ादे 01:00 बजे खाना खा कर अपनी बच्चों वाली सीट पर सो रहे थे तो हमने भी सोचा कि जितना हो सके इनके सोते-सोते ही रास्ता निकाल लें। हम दोनों पति पत्नी चाय के शौकीन हैं, तो सोचा कि बीच में एक चाय के साथ अल्प विश्राम ले लेंगे जिस से बॉस भी ना उठे और मन भी तरो ताज़ा रहे। पूरा एनएच44 ऐसा बना है कि रोड के दोनों तरफ खूब हरियाली है और मध्य प्रदेश के संदर्भ में कहें तो सिर्फ हरियाली थी, बाकी कुछ नहीं, वनस्पति में तो मैंने बताया ही था कि बबूल के पेड़ बहुतायत में थे लेकिन प्राणी जाति के नाम पर सिर्फ गाय ही दिख रही थी, उन गायों का कोई चरवाहा भी नहीं सिर्फ गाय। पत्नी जी के प्रश्न चालू थे, पुराने समय में इन्ही जंगलो में डाकू छुपते होंगे और मुझे ये सोच कर पसीना आ रहा था कि अभी भी ना छुपे हो इतना सूनसान रास्ता था, और हम यहाँ टी-ब्रेक लेने का सोच रहे थे। रास्ते को थोड़ा और दिलचस्प बनाने के लिए फिर से विजय राज जी को याद किया गया, और शुरू हुआ महाभारत का वो अध्याय जहां पांडव अपना सब कुछ हार कर अज्ञातवास को चले गए। पांडव अज्ञातवास को निकले ही थे कि हमारे होमस्टे वाले सज्जन का फोन आया कि सर जी मटर तो नहीं मिल रही, सादा पनीर और गोभी बनवा दूँ? हमने भी कहा, हाँ जी कोई बात नहीं, हमें अभी भी 3 घंटे तो लगेंगे ही पहुँचने में। इस समय हम मध्य प्रदेश के लखनादावन में थे और चाय की टपरी की तलाश में इधर-उधर झाँकते चल रहे थे। सज्जन ने फिर कहा ठीक है सर, आप बस पेंच नेशनल पार्क के आगे जब नागपुर में प्रवेश करो तब मुझे बता देना, लोकेशन भी भेज दूंगा मैं। हमने सोचा कितना भला मानुस है।

लखनादावन से हम जैसे ही सियोनि पहुँचे, शाम के लगभग 04:30 बजे होंगे नीले आकाश में तीन चार सेना के लड़ाकू विमान आसमान में अठखेलियाँ करते नज़र आए, फिर हमें पता चला की यहाँ एयर फोर्स का स्टेशन है और ये विमान वही के हैं, सचमुच अद्भुत नज़ारा था वो। पेंच नेशनल पार्क पहुंचे तो ऐसा लगा कि पीछे जो बबूल का जंगल हम पार करते हुए आए हैं वह तो कुछ भी नहीं है, अत्यंत सुंदर नज़ारा था और मौसम भी बढ़िया हो चला था काले बादल घिर आए थे लेकिन चाय अभी भी नसीब नहीं हुई थी और शरीर थोड़ा सा विश्राम मांग रहा था। तभी बीच जंगल में एक होटल बोर्ड दिखाई दिया और हमको कुछ आशा बंधी, चलते-चलते कुछ दूर ही एक सुंदर रिज़ॉर्ट बीच जंगल में ऐसा लगा मानो हमें या हमारे जैसे कई लोगों को चाय मुहैया करने के लिए ही बनाया गया था, मालूम किया तो पता चला कि ये एक बिसोन रिट्रीट रिज़ॉर्ट नामक बड़े रिज़ॉर्ट की एक शाखा है और असली रिज़ॉर्ट जंगल के बीचों बीच है जहाँ आपकी किस्मत अच्छी हुई तो आपको अपने कमरे की खिड़की से ही बाघ दिख जाएगा, ख़ैर हमें तो बस चाय चाहिए थी। इस समय शाम के 06:00 बज चुके थे और मौसम ऐसा हो गया था कि बारिश होना तय था। चाय पीते-पीते पत्नी जी ने ध्यान दिलाया की होमस्टे वाले सज्जन को फोन कर लीजिये की कहाँ आना है अब तो ज्यादा समय नहीं लगेगा पहुंचने में। मैंने उनको फोन लगाया लेकिन नेटवर्क न होने के कारण बात नहीं हो पायी तो सोचा कि चलो अभी ज्यादा समय नहीं गँवाते हैं, आगे जा कर फोन करेंगे ।

वहाँ से निकल कर हम हाइवे पर कुछ दूर ही चले होंगे कि मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी, ऐसी कि थोड़ी दूरी का भी मुश्किल से दिख रहा

था, सभी गाड़ियाँ फॉग लाइट के साथ ही चल रही थी। लगातार बिजली चमक रही थी, बादल गरज रहे थे; अपनी बेबी-सीट पर बैठे हमारे बॉस एकदम सन्न अवस्था में बाहर देख रहे थे और शायद समझने कि कोशिश कर रहे थे कि ''चल क्या रहा है?'' पत्नी जी ने उनके मन को थोड़ा शांत करने के लिए 'चक धूम धूम' गाना शुरू कर दिया और सचमुच छोटे उस्ताद भी बाहर की फिकर छोड़ कर गाने में मगन हो गए। काफी देर बारिश में चलने के बाद जब बारिश थोड़ी हल्की हुई तो एहसास हुआ की नोटिस बोर्डों पर अब मराठी भी लिखी हुई है, अर्थात हम महाराष्ट्र में प्रवेश कर चुके हैं।

हम मनसर में थे, नागपुर से लगभग 40 किमी दूर, फोन में अब नेटवर्क भी आ रहा था, हमने अपने होमस्टे वाले सज्जन को पता पूछने के लिए फोन किया, उन्होंने फोन उठाते ही बोला ''सर जी कहा हैं आप? मैं कब से फोन कर रहा हूँ?'' हमने बताया कि ''पीछे स्थिति कुछ खराब थी लेकिन अब बस हम एक घंटे में पहुँच जाएंगे, 7:30 बजे तक तो ज़रूर, आप बस सही लोकेशन बता दीजिये। ''उधर से जवाब आया, ''आप ऐसा करिए की फलाना चौक पर पहुंच कर किसी से भी पूछ लेना की अंबाजरी झील कहाँ है, तो जब आप वहाँ पहुँच जाएं तब मुझे कॉल कर देना, मैं आपको लोकेशन भेज दूंगा। और सरजी वो मैंने लड़के को भेजा था लेकिन पनीर तो मिला नहीं मटर मिल गयी है, आलू मटर और गोभी बनवा दूँ? हमने खीझ कर कहा हाँ जी जो मर्ज़ी बनवा दीजिये, हम बस आ रहे हैं। हम 7:00 बजे के आस पास नागपुर शहर में प्रविष्ट हुए और प्रवेश करते ही दर्शन हुए महाराष्ट्र की प्रसिद्ध कला वर्ली के, यहाँ सड़क किनारे दोनों तरफ दीवारें वर्ली एवं अन्य भारतीय कलाओं जैसे मधुबनी इत्यादि से सुसज्जित थीं, साफ-सफाई भी ऐसी की मानो अभी-अभी ही झाड़ू लगी हो। सज्जन के कहे अनुसार फलाना चौक पहुँच कर पूछते-पूछते अंबाजरी झील तक पहुंचे, झील थी तो बहुत सुंदर लेकिन आस पास बिलकुल अंधेरा और सूनसान सड़क, हमने झट पट सज्जन को फोन किया की ''हम झील पहुँच गए हैं अब तो लोकेशन भेज दीजिये। तो वो उधर से खिखियाते हुए बोले की ''अब लोकेशन का क्या करना है बस सीधे चले आइये 500 मीटर में ही है होमस्टे ''अब हमारे सब्र का बांध टूट रहा था क्यूंकी 500 मीटर क्या अगले 100 मीटर से ही झील शुरू हो रही थी, हमने कहा, ''श्रीमान पनडुब्बी तो घर ही भूल आए, अब झील के अंदर 500 मीटर कैसे आयें ''उधर से वो हँसते हँसते बोले की ''अरे क्यूँ मज़ाक कर रहे हो आप, झील के दूसरी तरफ से रास्ता बंद है इधर से तो खुला है, अरे आप उधर पहुंच गए क्या? ''ये सुन कर ऐसा लगा की महाराष्ट्र की हजारों तुतरी मेरे दिमाग में बजने लगी हों। मैंने फिर भी धीरज बाँधते हुए पूछा, अच्छा! अब क्या करें? आप तक कैसे पहुचेंगे?'' सज्जन ने कहा, ''कोई बात नहीं आप वापस जाइए चौक पर और किसी को पूछ लीजिए अंबाजरी झील कहाँ है? अच्छा हाँ, सर जी वो मटर गोभी नहीं बन पाया, नौकर को

जल्दी जाना था तो वो आलू की सब्जी बना गया है और मटर आलू की जगह जीरा आलू बना गया है, रोटी मैं खुद ही गरम गरम बना दूंगा, ठीक है न! ''मैंने किसी तरह खुद को संभालते हुए कहा, ''ठीक है, आप बस बच्चे के लिए दूध का इंतेजाम कर लीजिए बाकी कुछ भी चलेगा ''उधर से आवाज़ आई, ''ओह हो! हाँ दूध भी तो था ना, अरे रे अब तो देखना पड़ेगा, पैकेट वाला चलेगा क्या सर?'' अब मेरी हिम्मत जवाब दे रही थी मैंने जी बोल कर फोन रख दिया और वापस चलत-चलते पत्नी जी को सब बताया। उन्होंने हँसते-हँसते कहा की उन्होंने कल रात ही दूध को बोतलों में जमा लिया था ताकि रास्ते में खराब न हो तो कल सुबह तक के लिए पर्याप्त मात्रा है हमारे पास और पनीर मिलने की उम्मीद तो वो पांडवों को अज्ञातवास मिलने से ही छोड़ चुकी हैं। उनके हंस कर ताल देने से मन हल्का हो गया और फिर हम अपना हास्य रस ले कर जैसे तैसे पूछते पाछते सज्जन के होमेस्टे तक पहुंचे, रात के करीब 9:00 बज चुके थे। वाकई में सज्जन भले आदमी थे, हमारे पहुँचते ही उन्होने अदरक वाली चाय और बॉस के लिए हल्दी वाला दूध बनाया, सबने मिल कर गरम-गरम फुल्कों के साथ आलू और जीरा आलू की सब्जी पूरे चाव से खाई और गप्पों का सिलसिला काफी रात तक चला चूंकि कल तो कहीं जाना नहीं था। ये सफर यहीं तक था, कल से तो इस नए शहर में नया घरौंदा बनाना था।

हास्य आलेख

नेताजी की वसीयत

मोहम्मद इमरान अंसारी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

अपने बड़े से देश के एक छोटे से गाँव लड्डुनपुरा में एक बड़े नेता जी रहते थे जिनका नाम था छोटेलाल वैसे तो नेताजी का कद मुश्किल से 5 फुट का रहा होगा। हालांकि अपना कद नापने की उन्होंने कभी कोशिश नहीं की और कोई दूसरा नाप लेता, ये बड़े नेताजी को पसंद नहीं था, इसलिए मोटे सोल वाले जूते खास शहर से बनवाकर लाते थे। हाँ, अलगू दर्जी कपड़े सिलने के बहाने औना-पौना नाप लेता था कभी कभी। उसी ने गाँव वालों को ढके छुपे बताया था कि बड़े नेताजी अपने नाम के अनुरूप छोटेलाल ही थे और कद में मात खाए हुए थे, जिसकी कमी वो खुद को 'बड़े' नेताजी कहलवाकर पूरी कर लिया करते थे।

अब 'बड़े' नेताजी बड़े कैसे बने इसका भी एक रोचक किस्सा है, हुआ कुछ यूं कि कोई बीस बरस पहले एक बार गाँव के किनारे बहती नदी में बाढ़ आ गई और ये खबर उड़ी कि प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी बाढ़ के हालात का जायज़ा लेने के लिए कभी भी गाँव का दौरा कर सकते हैं। ये खबर सुनते ही अपने छोटेलाल, जो अभी तक छुटभैया नेता ही थे, अपनी कमर कस ली कि ये मौका हाथ से नहीं जाने देना है। जैसे ही पता चला कि फलां दिन मुख्यमंत्री जी अपने लाव लश्कर के साथ गाँव का दौरा करेंगे। छोटेलाल जी खादी का कुर्ता पायजामा पहनकर और सर पर झक सफ़ेद गांधी टोपी लगाए पूरी तरह से मुस्तैद होकर निकल पड़े। छोटा सा गाँव था, एक मोड़ के पास नेताजी छुपकर खड़े हो गए और आंखो में प्याज का रस निचोड़-निचोड़ कर आँसू भर लिए, जैसे ही मुख्यमंत्री जी मोड़ से मुड़े नेताजी जैसे जादू के ज़ोर से प्रकट हुए और आंसूओं से भरी आँखें लिए लम्बवत मुख्यमंत्री जी के चरणों में लेटकर उनके पैर पकड़ लिए। मुख्यमंत्री जी सकपकाए और अपने पैर छुड़ाने का भरपूर प्रयास किया पर नेताजी ने तो मगरमच्छ के जबड़ों की भांति पैरों को जकड़ लिया था।

आखिरकार मुख्यमंत्री जी ने हार मानकर और आने वाले चुनावों को मद्देनजर रखते हुए इसे भी अपनी छवि चमकाने का एक बढ़िया अवसर माना और नेता जी की बगलों में हाथ देकर प्यार से उनको ऊपर उठाया और तपाक से गले लगाकर उनके आँसू अपने हाथों से पोंछते हुए बोले 'रो मत प्यारे दोस्त! सब ठीक हो जाएगा' छोटेलाल ने इसे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पल मानते हुए और आंसूओं को अपने चरम तक खींचते हुए फौरन मौके पर चौका मारा और कहा 'ये आंसू मेरे लिए नहीं बल्कि मेरी जान से बढ़कर मेरे गाँव वालों के लिए हैं'। मुख्यमंत्री जी समझ गए कि पूरा घाघ आदमी है ये फिर कुछ सोचकर उनका कंधा थपथपाया और कहा कि 'जल्दी सब ठीक हो जाएगा' और ये कहकर आगे बढ़ गए। गाँव वाले आश्चर्य और विस्मय से इस पूरे प्रकरण को देख रहे थे। छोटेलाल की धाक पूरी तरह से जम चुकी थी। आखिरकार प्रदेश के मुख्यमंत्री ने उनको गले से लगाया था और खुद अपने खुरदुरे हाथों से उनके आँसू पोंछे थे। ये गाँव के इतिहास कि अब तक की सबसे बड़ी घटना थी और इसके नायक थे छोटेलाल। बस उसी दिन से छोटेलाल 'बड़े' नेता जी बन गए। हालांकि तबसे गाँव में कुकुरमुत्ते की तरह कई छोटे बड़े नेता उग आए हैं। जिनमें से एक इतवारीलाल के बारे में सुनने में आया था कि विधायक जी का खास मुंहलगा था। पर आज तक छोटेलाल जैसा रुतबा किसी का न हो सका। वो मरते दम तक 'बड़े' नेता जी ही कहलाए।

मरने से कुछ दिन पहले नेताजी दोपहर में आँगन में लेटे हुए थे कि उनकी आँख लग गई और उन्होने सपना देखा कि एक स्याह अंधेरे कि तरह काला भुजंग आदमी उनकी छाती पर चढ़कर बैठा हुआ है, उसने उनका टेंटुआ दबा रखा है और कह रहा है 'चल मेरे साथ तेरा वक़्त हो लिया, बोल दे अगर किसी को कुछ कहना हो'। नेताजी पसीने से तरबतर घबराकर उठ बैठे और डरते हुए सोचने लगे आज तो साक्षात मौत सामने दिखने लगी थी, लगता है यमराज ने याद कर लिया है। नेताजी ने बहुत विचार किया और सोचा कि अब चलाचली की बेला है और मैं एक जिम्मेदार और 'बड़ा' आदमी हूँ, अब वसीयत कर देनी चाहिए। वैसे तो सभी घर वाले एक नंबर के मक्कार और धूर्त हैं, मन तो किसी को एक कानी कौड़ी भी देने का नहीं है, पर क्या करूँ मजबूरी है साथ लेकर भी तो नहीं जा सकता।

यही सब सोचकर नेताजी अनोखेलाल नाम के काइयाँ और गाँव के इकलौते वकील के पास पहुंचे, यूं तो अनोखेलाल शहर की कचहरी में मामूली अर्दली थे पर गाँव में वकील बाबू के नाम से ही जाने जाते थे। उसी शाम नेताजी ने अनोखेलाल वकील से अपनी वसीयत लिखवा डाली और उनको ये निर्देश दिया कि मेरे मरने के बाद ही इस वसीयत की खबर आम हो और जब तक तुम ही इसे अपने पास सुरक्षित रखो। अनोखेलाल के लिए ये वसीयत लिखने का पहला मौका था। उन्होने एक सादे कागज़ पर नेताजी के कहे अनुसार लिख डाला और उनसे अंगूठा लगवा लिया। रुपए, आने और पाइयों का हिसाब रखने वाले बड़े नेताजी से इस काम के पूरे दो हज़ार रुपये झटककर अनोखेलाल ने पूरे हफ्ते की कमाई पूरी कर डाली।

कुछ दिनों बाद ही एक खुशगवार सी सुबह को जब चिड़ियाँ चहचहाँ रहीं थीं। आधा गाँव सोया पड़ा था। जैसे सभी को एक दिन मर जाना है, वैसे ही नेताजी भी उस दिन मर गए। सुबह जब उनकी भारी भरकम पत्नी चाय लेकर आईं तो पाया कि नेताजी टें बोल चुके हैं। होते-होते खबर आम हो गई और दोपहर तक 'बड़े' नेताजी का दाह संस्कार पूरा हो गया। शाम को अनोखेलाल नेताजी के घर पहुंचे और जाकर ये विस्फोटक खबर सुनाई कि नेताजी ने मरने से कुछ दिन पहले वसीयत कर दी थी और मुझे आदेश दिया था कि मैं उसको सबको सुना दूँ। सबने संशक भाव से अनोखेलाल को देखा और पूछा कि ये सच है? हमारे पूरे खानदान में आज तक तो किसी ने वसीयत की नहीं है। रुपए-पैसे और जमीन-जायदाद के झगड़े हम लोग लाठी- डंडों से सुलझा लेते हैं। अनोखेलाल ने कहा ये वसीयत के रूप में नेताजी की आखिरी इच्छा है, आप लोग चाहें तो ऐसे ही मान लें, नहीं तो कोर्ट कचहरी से मनवाना पड़ेगा। कोर्ट कचहरी का नाम सुनकर सब सन्नाटे में आ गए और बोले कि ठीक है वकील बाबू 'आप सुनाइए'।

अनोखेलाल ने वसीयत को अपने फटे हुए बैग से बरामद किया और पढ़ने के लिए सबके सामने खोला। उनके खुराफाती दिमाग ने वसीयत

खोलते ही अपनी रोटियाँ सेंकने की जुगाड़ लगाई और उन्होने सबसे पहले कहा कि इस वसीयत को लिखने, संभालकर रखने और लागू करवाने के लिए सबसे पहले नेताजी ने मुझे यानि अनोखेलाल वकील को पूरे पाँच हज़ार रूपये दिए जाने के बारे में लिखा है। हालांकि इस बात का ज़िक्र कहीं नहीं था पर अनोखेलाल जानते थे ये सब अंगूठाटेक लोग क्या जाने क्या लिखा है वसीयत में और नेताजी तो रहे नहीं मेरी बात काटने को, तो मौके का फायदा उठा लो।

नेताजी के बड़े लड़के ने कहा 'ठीक है वकील बाबू आप आगे बोलो'। वकील ने आगे पढ़ा कि 'मेरी पत्नी रूपादेवी अपने नाम के एकदम विपरीत है, ये मेरा ही हौसला था जो मैं इसके साथ निभा ले गया। दिन-रात चाट-चाट कर खाने से मोटी भैंस बन गई अपनी पत्नी के लिए मैं इस शर्त पर पाँच हज़ार रुपये महीना बांधता हूँ, कि जिस दिन सरकार गाँव में पक्की सड़क बनवा देगी उसी दिन से इसे पाँच हज़ार रुपये महीना मिलेंगे तब तक केवल एक हज़ार रुपये महीना इसे दिए जाएँ ताकि इसका चटोरपना बंद हो।'

आगे लिखा है कि 'मेरा बड़ा बेटा कुन्दन एक नंबर का सुस्त और निकम्मा है, इसके लिए मैं इस शर्त पर दो लाख रुपये छोड़ता हूँ कि जब तक सरकार बम्पर भर्तियाँ नहीं निकालती और ये उसमें से नौकरी नहीं लग जाता तब तक इसे केवल दो लाख रुपये का ब्याज ही मिलेगा। इसके बाद लिखा है कि 'मेरा छोटा बेटा चन्दन एक नंबर का अय्याश और शराबी है, मैं इसके लिए भी दो लाख रुपये इस शर्त के साथ छोड़ता हूँ कि जब तक सरकार पूर्ण नशाबंदी नहीं करती तब तक इसे भी केवल ब्याज ही मिलेगा।

आगे, 'मेरी बड़ी बिटिया लाजवंती बहुत सुघड़ और गृहस्थ औरत है, मैं इस शर्त पर उसे पच्चीस हज़ार रुपये देता हूँ कि वो मेरे दामाद और एक नंबर के कमीने जगमोहन के खिलाफ घरेलू हिंसा का केस दर्ज कराए, केस दर्ज न किए जाने तक इसे कुछ नहीं मिलेगा। इसके बाद

लिखा है कि 'मेरी छोटी बेटी सुनैना अपने नाम के अनुरूप सुंदर है पर इसकी चपलता से मुझे डर लगता है कि ये किसी दिन हमारे परिवार कि नाक न कटवा दे, इसलिए मैं इसके ब्याह के लिए एक लाख और इसे उपहार देने के लिए बीस हज़ार रुपये इस शर्त पर छोड़ता हूँ कि ये सरकारी स्कूल से पढ़कर बारवीं कक्षा में प्रथम आए, अगली सरकार बदलने तक इस बात का इंतज़ार किया जाए। और ये ऐसा न कर पाए तो इसका ब्याह मेरे घरेलू नौकर 'कालू' से कर दिया जाए।

आगे, 'मेरे इस परिवार के अलावा मेरा भतीजा दिवाकर मेरे साथ रहता है और नेतागिरी में अपनी किस्मत चमका रहा है, इसकी मक्कारी, धूर्तता और चालाकियों को देखते हुए मुझे पूरा भरोसा है कि ये एक दिन नेता ज़रूर बन जाएगा। मैं इसको चुनाव के लिए पार्टी का टिकट मिलने की शर्त के साथ अपने मकान के आगे का हिस्सा अपना कार्यालय खोलने के लिए देता हूँ, तब तक इसे सिर्फ मेरे पुराने कपड़े और टोपियाँ दी जाएँ। इसके आगे लिखा था 'बाकी मेरा मकान, दुकान, आँगन सब मैं अपने बेटों में बराबर बांटता हूँ इस शर्त के साथ कि वो चुनाव के वक़्त इसे चुनावी जलसे आदि के लिए पार्टी को दे देंगे, अगर ये इसमें आनाकानी करें तो इन्हें बेदखल कर दिया जाए। इति श्री।'

सब अवाक बैठे सुनते रहे और वसीयत समाप्त होते ही समवेत स्वर में बोले वाह जी वाह – नेताजी की वसीयत। नेताजी जाते–जाते भी चुनावी वादे कर गए न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेंगी।

कविता

एक उम्मीद है

रुचि जैन
अधिकारी
इंदौर विजयनगर स्कीम शाखा

टूट चुके आईने के हिस्से में
मेरा जुड़ा हुआ दिख जाना
एक उम्मीद है।

भूख से तड़पते हुये, नन्हे बालक को
रोटी का टुकड़ा दिख जाना
एक उम्मीद है।

अपनी मां से बिछड़े हुए बछड़े को
कहीं दूर रम्भाना सुनाई दे जाना
एक उम्मीद है।

आसमान की ओर आँखें गड़ाये बैठे
किसान पर बारिश की एक बूँद का
गिर जाना एक उम्मीद है।

गिद्ध के मुँह फसे हुए दुर्बल पशु का
गिर के भी बच जाना
एक उम्मीद है।

नकारात्मकता के इस दौर में
कुछ आशावादी लोगों का मिल जाना
एक उम्मीद है।

आलेख

साइबर सुरक्षा के लिए 5G की चुनौतियाँ

प्रमोद कुमार विश्वकर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, चंडीगढ़

लंबे समय से प्रतीक्षित 5G युग आखिरकार विभिन्न तकनीकी प्रगति के साथ आ गया है। 5G मोबाइल नेटवर्क अन्य लाभों के साथ तेज़ डेटा दर, कम विलंबता, बेहतर नेटवर्क क्षमता, बढ़ी हुई उपलब्धता और बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करता है।

मोबाइल नेटवर्क की पहली चार पीढ़ियों ने कनेक्टिविटी में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि तीसरी और चौथी पीढ़ी का लक्ष्य मोबाइल डेटा को बढ़ाना था। 5G इसी पैटर्न पर बनेगा, तकनीकी नवाचार और विकास के लिए नए क्षेत्र तैयार करेगा। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसी प्रौद्योगिकियों पर इसका संभावित प्रभाव महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे दुनिया 4G से 5G में बदलाव के लिए तैयार हो रही है, 5G नेटवर्किंग प्रणाली द्वारा प्रदान की जाने वाली साइबर सुरक्षा तंत्र को समझना महत्वपूर्ण है।

5G नेटवर्क, हाल ही में बाजार में शामिल होने के कारण, वर्तमान में सीमित उद्योग के कारण इसे तैनात करना महंगा और समय लेने वाला है। हालाँकि, लंबे समय में, यह किफायती और सुविधाजनक लाभ प्रदान करता है। जैसे-जैसे 5G उद्योग नए खिलाड़ियों के साथ विस्तारित होगा, प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, जिससे बेहतर सेवा पेशकश और प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण होगा।

जैसा कि उभरती प्रौद्योगिकियों के साथ आम है, 5G की तैनाती सुरक्षा चिंताओं का एक नया सेट पेश करती है, खासकर नेटवर्क सुरक्षा के संबंध में। इसलिए, 5G रोलआउट से उत्पन्न होने वाले साइबर सुरक्षा मुद्दों की व्यापक समझ से संगठनों को अपने निवेश को अनुकूलित करने और अपने डेटा को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी।

साइबर हमलों के बढ़ते खतरे का मुकाबला करने के लिए 5G साइबर सुरक्षा में व्यापक सुधार ज़रूरी है। जबकि अन्य 5G-सक्षम उपकरणों के उपयोग से जुड़े हैं। फिर भी, ये सुविधाएँ उद्यमों, सार्वजनिक

निकायों और व्यक्तियों के लिए समान रूप से जोखिम प्रस्तुत करती हैं।

साइबर सुरक्षा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण चिंताएं हैं :

विकेन्द्रीकृत सुरक्षा

प्री-5G नेटवर्क पर सुरक्षा ऑडिट और रखरखाव करना तुलनात्मक रूप से आसान था क्योंकि उनके पास संपर्क के कम हार्डवेयर ट्रैफ़िक बिंदु थे। हालाँकि, वर्तमान गतिशील सॉफ़्टवेयर-आधारित 5G

सिस्टम में, ट्रैफ़िक रूटिंग के लिए अधिक साइटें हैं, जिससे निगरानी की आवश्यकता बढ़ जाती है। आवश्यकता के बावजूद, इन साइटों की निगरानी करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, और विफलता अन्य नेटवर्क घटकों को खतरे में डाल सकती है। इसलिए, पूरी तरह से सुरक्षित 5G नेटवर्क के लिए सभी ट्रैफ़िक रूटिंग साइटों की सुरक्षा सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

हमले की सतह में तेजी से वृद्धि

किसी नेटवर्क की आक्रमण सतह उन विभिन्न पहुंच बिंदुओं को संदर्भित करती है जिनका एक हैकर शोषण कर सकता है। 5G के डायनामिक सॉफ़्टवेयर-आधारित सिस्टम में 4G के केंद्रीकृत हब-एंड-स्पोक डिज़ाइन की तुलना में अधिक ट्रैफ़िक रूटिंग पॉइंट होते हैं। नतीजतन, हैकर्स लॉग-इन उपयोगकर्ताओं के लिए स्थान ट्रैकिंग और मोबाइल रिसेप्शन तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करने के लिए अनियंत्रित नेटवर्क प्रवेश बिंदुओं की भीड़ का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा, नया नेटवर्क आर्किटेक्चर वर्तमान साइबर सुरक्षा प्रक्रियाओं को अप्रभावी बना देता है, जिससे नेटवर्क खतरनाक हमलों के संपर्क में आ जाता है।

डिजाइन और वास्तुकला को प्रभावित करना

व्यवसायों और नगर पालिकाओं द्वारा स्थानीय 5G नेटवर्क के विस्तार के साथ, उनके बुनियादी ढांचे में सूचना और संचार

प्रौद्योगिकी घटकों के समावेश में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। हालाँकि, इनमें से कई घटकों में आवश्यक एंटरप्राइज़-ग्रेड सुरक्षा का अभाव हो सकता है और वे कमजोरियों से ग्रस्त हैं जिनका साइबर अपराधी फायदा उठा सकते हैं। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि कुछ हैकर पहले से मौजूद कमजोरियों के साथ समझौता किए गए 5G घटकों को बाजार में लाने का प्रयास भी कर सकते हैं, जो लागत प्रभावी 5G स्थानीय नेटवर्क कार्यान्वयन की मांग करने वाले कुछ व्यवसायों को आकर्षित कर सकता है।

आपूर्ति श्रृंखला शून्य-दिन के हमले

हैकर आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से 5G नेटवर्क में घुसपैठ करने का प्रयास कर सकते हैं, भले ही कंपनियां अपने आईसीटी घटकों में सुरक्षा कमजोरियां पैदा न कर सकें। इसके अतिरिक्त, यदि 5G ICT घटकों के प्रतिष्ठित निर्माता के पास DevOps प्रक्रियाओं की कमी है, तो उत्पाद वितरण से पहले कमजोरियों का पता नहीं चल पाएगा। ऐसी शून्य-दिन की कमजोरियों के परिणामस्वरूप पर्याप्त गड़बड़ी होने की संभावना होती है।

IoT उपकरणों के निर्माण में सुरक्षा का अभाव है

बाजार में कई कम लागत वाले स्मार्ट उपकरणों से पता चलता है कि सभी निर्माता साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं देते हैं। 5G के आगमन से IoT के लाभ और अवसर मजबूत होंगे, जिसके परिणामस्वरूप अरबों अलग-अलग स्तर के कनेक्टेड डिवाइस होंगे, जिससे अरबों संभावित प्रवेश बिंदु बनेंगे। यहां तक कि फिश टैंक थर्मामीटर, स्मार्ट टीवी, दरवाजे के ताले, रेफ्रिजरेटर और स्पीकर जैसे मासूम दिखने वाले उपकरण भी नेटवर्क से समझौता कर सकते हैं। यदि IoT डिवाइस सुरक्षा मानकों में कमी है तो नेटवर्क कमजोरियाँ व्यापक खतरा पैदा कर सकती हैं ।

साइबर खतरों से निपटने के संभावित समाधान

5G तकनीक को लागू करने से कॉर्पोरेट परिदृश्य में बदलाव की लहर पैदा होना तय है। बैंकिंग क्षेत्र के साथ अन्य उद्यमों को इस परिवर्तन को सावधानी के साथ करना चाहिए। इस बदलाव की तैयारी के लिए, व्यवसायों को पर्याप्त सुरक्षा उपायों में निवेश करना चाहिए। इसमें उपकरणों तक अनधिकृत पहुंच को रोकने के लिए वीपीएन लागू करना, IoT उपकरणों को नवीनतम सुरक्षा पैच के साथ अपडेट करना और उनके सिस्टम में घुसपैठ को रोकने के लिए मजबूत पासवर्ड बनाना शामिल है।

इसके अतिरिक्त, यह अनुशंसा की जाती है कि संगठन अपने कर्मचारियों को वर्तमान साइबर सुरक्षा सर्वोत्तम प्रथाओं पर शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण सत्र और कार्यशालाएँ आयोजित करें। किसी भी सुरक्षा अंतराल की पहचान करने और उसे दूर करने के लिए एक शीर्ष साइबर सुरक्षा फर्म के साथ जुड़ने की भी सलाह दी जाती है। 5G तकनीक के उदय से अनिवार्य रूप से साइबर खतरों में वृद्धि होगी। इस प्रकार, बोर्ड पर एक कुशल सुरक्षा भागीदार का होना समझदारी है। ऐसा भागीदार तेजी से पुनर्प्राप्ति की सुविधा प्रदान करेगा और भविष्य में व्यवधानों को रोकने के लिए साइबर सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करेगा। व्यवसायों को अपनी संपत्तियों की सुरक्षा और अपने संचालन में निरंतरता बनाए रखने के लिए साइबर सुरक्षा उपायों में व्यावहारिक होने की आवश्यकता है।

उपसंहार

कनेक्टिविटी की पहली चार पीढ़ियों में से प्रत्येक ने 3G और 4G नेटवर्क में मोबाइल डेटा को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की। 5G के साथ, मोबाइल ब्रॉडबैंड तक बेहतर पहुंच की दिशा में रुझान जारी रहेगा क्योंकि यह अंततः इसे प्रतिस्थापित करते हुए 4G के साथ काम करना चाहता है।

5G का आगमन तकनीकी उन्नति और नवाचार के लिए रोमांचक अवसर पैदा करने के लिए तैयार है, जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) में महत्वपूर्ण वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। जैसे-जैसे 4G से 5G में परिवर्तन आ रहा है, सेलुलर कनेक्शन का उपयोग करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए 5G नेटवर्किंग द्वारा पेश किए गए साइबर सुरक्षा उपायों के बारे में जानकार होना और किसी भी संभावित कमजोरियों के बारे में जागरूक रहना महत्वपूर्ण है।

5G नेटवर्क पर शिफ्ट होने की प्रक्रिया फिलहाल जारी है और दुनिया को इसकी आदत पड़ने में काफी समय लगेगा। इसलिए, तेजी से विकसित हो रहे बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए व्यवसायों को अचानक होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल होने की चपलता बनाए रखनी चाहिए। संभावित समस्याओं को रोकने के लिए, सुरक्षा प्रणालियों को संशोधित या अपग्रेड करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा, संगठनों को अपनी आंतरिक आईटी और सुरक्षा टीमों के लिए उपयुक्त रूप से कुशल सदस्यों की भर्ती करनी चाहिए, उन्हें अपडेट रहने के लिए लगातार प्रशिक्षित करना चाहिए, और आने वाली किसी भी समस्या के समाधान के लिए सर्वोत्तम संभव समाधान प्रदान करना चाहिए।

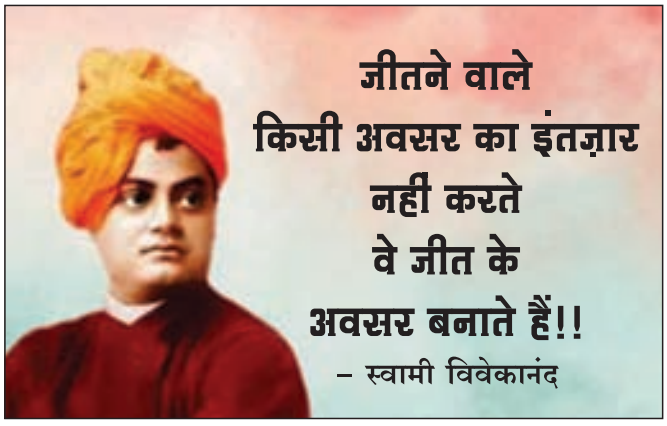

आलेख

बच्चों को उनका बचपन जीने दें।

अश्वनी कुमार गुप्ता
अधिकारी
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

मैंने अपना बचपन क्रिकेट खेल कर, सुनसान बगीचों से अमरूद चुराकर, हर प्रकार के उल्टे काम करके और थोड़ा बहुत पढ़ कर बिताया है।

मैंने घरवालों से चप्पल तोड़ मार भी खाई है और असफलता के गर्त में भी गिरा हूँ। कोशिश करने के बाद भी जीवन भर एवरेज विद्यार्थी ही बना रहा। मेरी माँ हमेशा से ही मेरा हमराज़ रही है, मैं अपनी माँ के बहुत करीब हूँ, इतना करीब हूँ कि अगर मुझे बुखार आने लगे तो उसे भी आने लगता है। मेरे हर कर्म से परिचित है और मैंने भी आज तक उससे कुछ नहीं छिपाया।

मुझे पढ़ने से ज्यादा कुछ अलग करने में मज़ा आता था। पार्कों में सीट के नीचे या क्यारियों में बीयर और शराब की बोतलें मिलती थी। हम कुछ दोस्त सुबह ही पार्कों में उन बोतलों को ढूँढने निकलते क्योंकि अधिकतर शराबी रात को ही पार्क में पीते थे और खाली बोतलें वहीं छोड़ जाते थे। पव्वा चवन्नी का, अद्धा अठन्नी का, बोतल रुपये की और बीयर की बोतल दो रुपये की बिक़ती थी। इस तरह मैनें और दोस्तों ने बोतल और तांबा लोहा-बेच कर बहुत पैसा बनाया। ये मेरी शुरूआती हॉबी बनती गई और अगर मैं उसको जारी रखता तो आज एक अच्छा खासा अमीर कबाड़ी वाला होता। सालों तक मैनें दोपहर को शहतूत, जामुन और मांझा लूटते हुए गुज़ारी थी। एक ज़माने में कंचों और गिल्ली डंडा का बेताज बादशाह रहा था।

ऐसा नहीं था कि मैं बिल्कुल नहीं पढ़ता था। लेकिन सिर्फ इतना भर पढ़ता था कि स्कूल में मार ना खानी पड़े। मुझे किस्से-कहानियां और कॉमिक्स की किताबें बहुत भाती थी।

समय बीता और आठवीं तक आते-आते मेरे खेलों और हॉबियों में बदलाव आया। अब मेरी सारी दुनिया बाक़ी चीजों से हटकर क्रिकेट पर अटक चुकी थी।

वो शायद मार्च, 2010 की सुबह थी जब मेरा दसवीं का बोर्ड का पेपर था। हमारे मोहल्ले के लड़कों का दूसरे मोहल्ले के लड़कों से क्रिकेट मैच बदा हुआ था। वो भी पूरे 20 रुपये का। टीम का करामाती स्विंग बॉलर और बेहतरीन बैट्समैन होने के नाते मेरा क्रिकेट टीम में होना ज़रूरी था।

हर पेपर में यही सब होता रहा। पेपर खत्म होने के एक घंटे के अंदर मैं लगभग 4 बजे एक्जाम सेंटर से मैदान पहुँच जाता था। तब मुझे बोर्ड के एक्ज़ाम या कॉम्पटीशन का महत्व नहीं पता था।

रिजल्ट आया और मैं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ, पिता जी खुश तो थे पर ज्यादा खुश नहीं थे क्योंकि उनकी उम्मीदें कुछ ज्यादा थी और माँ की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था।

15 वर्ष का था मैं, तब तक कोई उद्देश्य कोई सपना नहीं था मेरा। लेकिन जब अंदर से आवाज़ आती है कि कुछ करना है तो रास्ते अपने आप मिलते जाते हैं। अंक हमारी किस्मत निर्धारित नहीं करते, पुरुषार्थ और मेहनत किन्हीं अंकों का मोहताज नहीं होता। मंजिल और रास्ते कुछ भी हों, एवरेज बच्चे भी कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

अपने बच्चों को मार्गदर्शन दीजिए। मेरे जैसा आवारा मत बनाईये पर कोशिश कीजिए कि बच्चों को उनका बचपन जीने दिया जाए, क्योंकि बाद में तो ज़िन्दगी दौड़-भरी ही होने वाली है।

आज सैलरी का मैजेस भी वैसी खुशी नहीं देता जैसी उस 20 रुपये के मैच को जीतने पर मिलती थी।

किसी व्यस्त दिन के बाद जब बिस्तर पर होता हूँ, तो सोचता हूँ कि शायद कल फिर से वैसी सुबह हो। हम बल्ले लेकर निकलें और किसी दोपहर कीकर की पीली फलियाँ, शहतूत और झाड़ी के बेर बटोरते हुए हम कहीं दूर निकल जाएं।

कविता

बैंक कर्मी हैं हम!

प्रणब महापात्र
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, रांची

ना सेना से कम ना डॉक्टर से कम,
देश के लिए हमेशा काम करते हैं हम।
चाहे हो जनधन या हो नोटबंदी की उलझन,
हमेशा रहते हैं देश की जनता के संग।
कोई हमें श्रेय दे या ना दे, कोई हमें पूछे या ना पूछे,
सुख-दुःख में हमेशा काम आते हैं हम
बैंक कर्मी हैं हम बैंक कर्मी हैं हम.....।।

ना घर की चिंता और ना परिवार का गम,
काम करते-करते हमेशा भूल जाते हैं हम ।
चाहे हो गाड़ी चाहे हो घर का ऋण,
सही वक्त में ग्राहक को थमाते हैं हम ।
चाहे हो होली या हो दिवाली,
काम के लिए पीछे नहीं हटाते कदम ।
सुख-दुःख में हमेशा काम आते हैं हम,
बैंक कर्मी हैं हम बैंक कर्मी हैं हम.....।।

चाहे हो जाड़े या हो बारिश का मौसम,
हमेशा ग्राहक की सेवा करते हैं हम।
चाहे हो कृषि चाहे हो व्यवसाय का ऋण,
देने के लिए पीछे हटते नहीं हम।
कोरोना हो या कोई महामारी,
जीवन की परवाह करते नहीं हम।
सुख-दुःख में काम आते हैं हम
बैंक कर्मी हैं हम बैंक कर्मी हैं हम.....।।

चाहे हो ट्रैफिक चाहे हो बंद,
हमेशा समय में पहुंचते हैं हम।
चाहे हो सरकार की योजना या हो बैंक का काम,
परवाह किए बिना लग जाते हैं हम।
चाहे हो गरीब चाहे हो धनी,
सबको देते हैं एक समान सुविधा हम।
सुख-दुःख में काम आते हैं हम
बैंक कर्मी हैं हम बैंक कर्मी हैं हम .....।।

नराकास (बैंक व बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध वार्षिक बैठक

दिनांक 21.07.2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध वार्षिक बैठक का आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दक्षिण से उप निदेशक श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास ने सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्टों की समीक्षा की। बैठक में उपस्थित कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी ने सदस्य कार्यालयों को संबोधित करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। बैठक में श्री ई रमेश, सहायक महाप्रबंधक व सदस्य सचिव सहित श्री टी के वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, विशेष रूप से उपस्थित रहे । उक्त बैठक में नराकास की पत्रिका ''प्रयास'' के 47वें अंक का विमोचन किया गया एवं वर्ष 2022-23 हेतु राजभाषा शील्ड पुरस्कारों का वितरण किया गया।

प्रधान कार्यालय में

हिंदी कार्यशाला व क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम

आयोजित कार्यक्रम

हिंदी परिचर्चा कार्यक्रम

पुस्तकालय दिवस की झलकियाँ

कविता

मित्रता

प्रियान्शु गौतम
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

पैदा होते ही हर रिश्ता साथ में आया,
बस मित्रता का रिश्ता मैंने खुद बनाया।
एक रिश्ता ऐसा, जो धर्म, जाति और रंग से परे था,
जो प्यार, सम्मान, हर्ष और नोक-झोंक से भरा था।

जब भी यादों की किताब खोलता हूँ,
और उसमें खुशियों को टटोलता हूँ।
हर दर्द और हर खुशी में मित्रों को पाया,
पैदा होते ही हर रिश्ता साथ में आया,
बस मित्रता का रिश्ता मैंने खुद बनाया।

जहां भी, जैसे भी रहा सबने अपने हिसाब से जाना,
मेरे मन की भावनाओं को मित्र सिर्फ तुमने पहचाना,
मित्रता का मतलब है समझना और समझाना।
पैदा होते ही हर रिश्ता साथ में आया,
बस मित्रता का रिश्ता मैंने खुद बनाया।

अंधकार जब जीवन में आया,
सच्चा मित्र प्रकाश बनकर आया।
मित्रता वही जिसे मन से निभाया जाए,
जहां एक-दूसरे से कुछ न छिपाया जाए।
पैदा होते ही हर रिश्ता साथ में आया,
बस मित्रता का रिश्ता मैंने खुद बनाया।

मित्रता की कहानी हर युग में पाई,
कहीं राम-सुग्रीव तो कहीं कृष्ण-सुदामा ने निभाई।
मेरी खुशनसीबी कि मैंने इस रिश्ते को पाया,
पैदा होते ही हर रिश्ता साथ में आया,
बस मित्रता का रिश्ता मैंने खुद बनाया।

प्रतिभा राजपूत
प्रबंधक
पनकी शाखा, कानपुर

कविता

देश का किसान

पथ-पथ पर आते हैं संकट,
फिर भी बढ़ते जाते हैं।
हम वो जवान हैं देश के,
जो हरियाली फैलाते हैं।

मिट्टी ही हमारी सोना है,
जो दिल में आग लगाती है।
हम मेहनत करते थकते नहीं,
जो फसलों को बरसाती है।

हम है देश के संरक्षक,
जो लहलाते खेतों को सजाते।
हर घर में जल जाए चूल्हा,
बंजर में भी अन्न उगाते।

प्यासी धरती में हम बोते,
विकास के बीज हैं।
उगते सूरज संग बढ़ जाते,
जो हमको अजीज हैं।

देश को उन्नत करने में,
हम भी एक स्तम्भ हैं।
ये खेत और खलियान ही,
हमारा प्रतिबिंब हैं।

हम हैं इक सैनिक, हम हैं संरक्षक,
हम भी देश का मान हैं।
ना भूलो बलिदान हमारा,
हम देश के किसान हैं।

आलेख

एक बारिश भरी शाम

निधि माझा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, हैदराबाद

उस रात तेज बारिश हो रही थी। घर में घुसने की हड़बड़ी में, मैंने सड़क के पार खड़ी काली कार पर ध्यान नहीं दिया। जब मैंने किसी को कार के आसपास मंडराते हुए देखा तो मुझे एहसास हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है। मैं सोच नहीं पा रही थी कि कार के पास जाऊँ या नहीं, कार के पास जाना सुरक्षित है भी या नहीं। लेकिन मेरी सहजता ने मुझे अपने घर के गेट से सड़क के उस पार और कार के पास जाने की अनुमति दे दी। उसके बाद आधे घंटे में जो घटित हुआ उसे मैं अपनी सबसे अविस्मरणीय याद कह सकती हूँ।

मैंने देखा एक आदमी ऊपर से नीचे तक भीगा हुआ और घायल भी है। पहले जब मैंने उसे देखा, तो वह नशे में दिख रहा था क्योंकि वह अपना संतुलन खो रहा था। लेकिन जैसे ही मैं उसके पास गई, मुझे यकीन हो गया कि उसे चोट लगी थी, कोई नशीला पदार्थ नहीं खाया होगा ।

माफ कीजिए श्रीमान! क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ? मैंने उससे पूछा। वह सदमे की स्थिति में लग रहा था। मैंने उसे बुलाने की कोशिश की लेकिन वह अपनी कार के चक्कर लगाता रहा। मैं उसके बिल्कुल पास पहुंचने में सहज अनुभव नहीं कर रही थी क्योंकि मुझे डर भी लग रहा था कि कहीं वह इस हालत में मुझ पर हमला न कर दे। लेकिन बारिश में भीगने के बाद मेरा फोन बंद हो गया था इसलिए मैं किसी को फोन नहीं कर सकती थी। इसके अलावा, अगर मैं घर जाती जो कि सड़क के उस पार ही था, तो मेरी अति-सुरक्षात्मक माँ घबरा जाती और मुझे उसकी मदद नहीं करने देती। इसलिए मैं असहाय और क्रोधित महसूस कर रही थी क्योंकि मैंने परिणाम की परवाह किए बिना ही किसी की मदद करने का फैसला किया ।

मुझे याद है कि काफी देर बारिश में खड़े होकर अपनी कार के आसपास मंडराते आदमी को घूरते हुए, बिल्कुल खराब महसूस कर रही थी। फिर अगले ही पल, मैंने खुद को उसकी ओर चलते हुए और पास पहुँचते हुए पाया।

महोदय! मैंने उसका कंधा पकड़ते हुए पूछा, क्या तुम मुझे अपना नाम बता सकते हो? क्या तुम यहीं रहते हो?ऐसा लगता है कि वह आदमी सुनने या देखने या महसूस करने की क्षमता खो चुका है क्योंकि वह अपनी कार के चारों ओर घूम रहा था, केवल अब वह रो रहा था और बारिश में भीगने के कारण ठंड से कांप रहा था।

मैंने उसके दोनों कंधे पकड़ लिए और फिर से बात करने की कोशिश की।

मैं आपकी मदद करुँगी! मुझे बताओ कि तुम परेशान क्यों हो! क्या ये आपकी गाड़ी है?

मैंने उससे कम से कम पांच मिनट तक बार-बार यही प्रश्न पूछे, उसके बाद आखिरकार उसने मुझे देखा और डर गया। उस समय सच कहूँ तो, मैं भी बहुत डर गई थी, क्योंकि वह चिल्लाना और कांपना बंद नहीं कर रहा था। थोड़ी देर बाद, वह होश में आने लगा और शांत होने लगा। अंत में, जब उसने रोना बंद कर दिया, तो उसने मेरी तरफ देखा और मुझे बताया कि वह डीयू के दूसरे वर्ष का छात्र है जो शहर के बाहरी इलाके में एक स्कूली साथी के फार्महाउस में स्कूल रीयूनियन पार्टी के लिए बाहर गया था। वह खुशी-खुशी पार्टी में जाने के लिए राजी हो गया था क्योंकि जाहिर है कि हम हमेशा अपने स्कूल के

दोस्तों से मिलने और स्कूल की सुखद यादों को ताजा करने के लिए उत्साहित रहते हैं। जब वह फार्महाउस में दाखिल हुए तो उन्होंने मुझे बताया कि दो घंटे तक सब कुछ ठीक रहा। उसने तब कहा कि उन्होंने एक खेल खेलना शुरू किया जो अंतत: उन्हें धमकाने के एक अप्रिय प्रकरण में बदल गया। उसे बस याद है कि कुछ बच्चे उस पर चिल्ला रहे थे।

उसने आगे कहा जब मुझे होश आया तो मेरे सिर में चोट लगी थी और मैं अपनी कार के बाहर भीग कर सड़क पर पड़ा था। मुझे यह भी नहीं पता कि मैं शहर के किस हिस्से में हूं। वे मुझे कार में डालकर यहां लाए होंगे और उन्होंने मुझे मेरी ही कार से बाहर फेंक दिया होगा और ताला लगाकर चाबी फेंक दी होगी ताकि मैं घर न जा सकूं। वह आदमी अपना नाम कबीर बता रहा था, मुझे आने के लिए मुझे धन्यवाद दिया। उसने मुझसे पूछा कि उसे कौन सी जगह छोड़ दी गई है, और निकटतम पुलिस स्टेशन जाने का रास्ता पूछा। मैं उसे अपने साथ ले आई और अपने चौकीदार को रात भर के लिए उस कार की रखवाली करने के लिए कहा। पूरी कहानी सुनकर मेरी माँ शांत हो गई और उसे सांत्वना दी। उस रात कबीर मेरे यहां ही रूके।

इस घटना के बाद कबीर और मैं हमेशा के लिए अच्छे दोस्त बन गए। उन्होंने मुझे लोगों से सावधान रहना सिखाया, क्योंकि कुछ लोगों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता चाहे कितना भी समय बीत जाए। उन्होंने मुझे यह भी सिखाया कि डर का क्षण होना ठीक है। अगर आपके पास मदद का हाथ है, तो आप डर पर काबू पा सकते हैं और अपने पैरों पर फिर से खड़े हो सकते हैं।

कविता

चार लोग

प्रमोद रंजन
प्रबंधक
बेतिया शाखा

चार दिन की जिंदगानी है,
चार दिन की कहानी है,
चार नज़रें तुम्हें दोषी मानती हैं,
ये चार लोगों की कारस्तानी है।।

चार पल की खुशियाँ हैं,
चार मौके की मस्तियाँ हैं,
चार उंगलियां उठाते हैं तुमपे,
चार कदम की तन्हाइयां हैं।।

कुछ दिन से चुप हैं वो चार लोग
क्योंकी लोगों ने अपने सपने राख कर दिए,
कोई कुछ कर ही ना पाया,
इस डर से कि वो चार लोग क्या कहेंगे।।

इन चार लोगों को ढूंढने में ज़िंदगी निकल गयी,
जो चार बात कह कर चले गए,
जब अंत समय आया तो हम
उन चारों के कंधे तलाशते रह गए।।

आलेख

मृगतृष्णा

प्रियंका आनंद
परि. अधिकारी
हाँसपुकुर शाखा

दरवाज़े की चौखट पर बैठी-बैठी लूसिया सामने लगे पीपल के वृक्ष को देख रही थी और किसी गहन चिंतन मनन में डूबी थी। लूसिया की तरह वह वृक्ष भी काफी वृद्ध हो चुका था। परंतु, अब भी अपने छांव से पूरे लाडपुरा गांव के वासियों को राहत देने के लिए काफी था ।

लूसिया का जन्म राजस्थान के एक छोटे से गांव लाडपुरा में हुआ था। माँ की मृत्यु जन्म के कुछ महीने बाद ही हो जाने से उसका पालन-पोषण उसके पिता ने ही किया था। पिता एक गाइड का काम करता था जो देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को राजस्थान के पर्यटक स्थल दिखाया करता था। उसने ही बड़े प्यार से अपनी बेटी का अंग्रेज़ी नाम लूसी रखा था, पर लोग उसे प्यार से लूसिया ही बुलाना पसंद करते थे।

लूसिया बचपन से ही काफी समझदार थी, उसने पीपल के वृक्ष की छांव में ही शिक्षा ग्रहण की थी। कुछ समय पश्चात ही उसके पिता की मृत्यु हो गई और अपने भरण-पोषण के लिए लूसिया गांव के बच्चों को शिक्षा देने लगी। लूसिया अपने गांव के चुनिंदा पढ़े-लिखे व्यक्तियों में गिनी जाती थी, गांव के सरपंच भी कई मामलों में उससे सलाह मशवरा लिया करते थे। यूं तो लूसिया की भी अपने जीवन से कई इच्छाएं थी पर कहते हैं ना गरीबों के सपनों का गला स्वयं गरीबी ही घोट देती है। गांव के अन्य बच्चों के सपने अधूरे ना रह जाए इसलिए लूसिया ने सब को शिक्षित करना ही अपना धर्म मान लिया था। उसने गांव की औरतों को भी शिक्षा देना शुरू किया था, लूसिया ने अपनी पूरी जिंदगी ही समाज सेवा को समर्पित कर दी थी।

लाडपुरा गांव वैसे तो था काफी खुशनुमा, लोग भी आपसी प्रेम और सौहार्द्र के साथ रहा करते थे, पर गांव की पानी की समस्या सर्वोपरि थी।

गांव के लोगों की तरह लूसिया भी इस समस्या से त्रस्त थी। उसके छोटे से कच्चे मकान के सामने ही एक चापाकल थी, लूसिया वहां पानी से भरा एक मिट्टी का बर्तन हमेशा रखती थी जिससे आसपास के लोगों और राहगीरों की प्यास बुझती थी ।

जब उस वर्ष भी बारिश नहीं हुई तो समस्या काफी जटिल हो गई। गांव का कुआं भी सूख रहा था। गांव के कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के वादों में यकीन कर लूसिया ने भी सोचा कि शायद जल की समस्या समाप्त हो जाएगी, नदियों को जोड़ा जाएगा और इस अंतहीन सूखे का अंत हो आएगा, उसने यह सोच कर उन लोगों के पास अपनी जमा पूंजी लगा दी कि शायद कुछ तो भला होगा।

कुछ ही दिनों बाद लूसिया को यह सुनने को मिला कि वह लोग लूसिया और उसके जैसे कई गांव वालों के पैसे लेकर नौ दो ग्यारह हो चुके थे। लूसिया काफी टूट चुकी थी, उससे अपने प्यारे गांव की ऐसी स्थिति देखी नहीं जा रही थी, अब तक सूखे से कई लोग अपनी जान भी गवां चुके थे।

यही सब सोचते-सोचते चौखट पर बैठी लूसिया की नज़र उस मिट्टी के बर्तन पर पड़ी जो कभी पानी से भरा रहा करता था, आज उसमें एक बूंद भी पानी का नामोनिशान नहीं था। बर्तन सूखा पड़ा था और अब तो जमीनों में भी दरारें पड़ने लगी थी।

लूसिया चौखट से आह भरते हुए उठी और कुछ बड़बड़ाते हुए अंदर लगे खटिए पर जा लेटी और सूनी निगाहों से अपनी खिड़की से आसमान की ओर देखने लगी।

दूर गांव से जो पीने का पानी भी आया करता था वह कल से नहीं आया था।

लूसिया का मन आज कुछ ज्यादा ही व्याकुल हो रखा था, कई नेताओं के सामने भी अपने गांव की समस्या लेकर जा चुकी थी पर उसे निराशा ही हाथ लगी थी और अब उसकी बूढ़ी काया से भागदौड़ करना भी मुश्किल हो चुका था।

पड़ोस में रहने वाली सविता उसकी बूढ़ी अवस्था देख रात्रि के वक्त भोजन के लिए कुछ रोटियां लेकर आई, पर लूसिया ने भोजन करने से इनकार कर दिया।

सविता ने थाल मेज पर रखकर प्यार से बोला, 'काकी माँ रात्रि में जब भूख लगे तो भोजन कर लेना', लूसिया ने प्यार से सर हिलाकर सहमति दे दी।

अगले दिन सुबह-सुबह ही आसमान में काले बादल छाए दिखाई दे रहे थे, पूरे गांव में कोतुहल का माहौल बना हुआ था, सब लोग आस लगाए आसमान की ओर ताक रहे थे। तभी एकाएक जोर से बादल के गरजने की आवाज आई और तेज वर्षा होने लगी, पूरे गांव में उत्साह का माहौल छा गया।

खुशी से झूमती हुई सविता दौड़ती हुई लूसिया के दरवाजे पर पहुंची तो देखा कि दरवाजा अब भी वैसा ही लगा था जैसे उसने रात्रि में जाते वक्त छोड़ा था, अंदर जाने पर देखा कि रोटियां अब भी मेज पर वैसे ही पड़ी थी और लूसिया अपनी खाट पर ही दम तोड़ चुकी थी ।

बाहर ज़ोरों की वर्षा हो रही थी और लूसिया का मिट्टी का बर्तन पानी से भर कर छलक रहा था ।

रेत के इस समंदर में तू मेरी मृगतृष्णा सामोह है, ज़िंदगी तू आखिर क्या चीज है भला।।

कविता

थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी...

नितिन गुप्ता
अधिकारी
वास्को शाखा

मसरुफ हूँ इतना ज़िन्दगी कि जद्दोजहद में,
नहीं है, थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी,
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी।
अभी तो कई काम बाकी हैं मेरे,
घर के, ऑफिस के, कई मकाम बाकी हैं मेरे,
कैसे सांस ले लूँ मैं दम भर,
नहीं है, थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी,
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी।
सुबह से शाम यूंही बीत जाती है,
ना खाने कि फिकर, ना पानी कि तलब है,
ना दिन में चैन मिलता है,
ना ही रात को नींद अच्छी आती है,
कैसे ये सब, संतुलित करुँ मैं,
नहीं है, थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी,
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी।
इतना काम सुबह शाम करते-करते,
कहीं मैं ही काम का ना रहूँ,
फिर क्यूँ करें इतनी हाय तौबा
चलो निकालते हैं,
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी,
थोड़ा सा वक्त अपने लिए भी।

आलेख

सब्सिडी

श्वेता शर्मा
अधिकारी
बिष्टुपुर शाखा

क्या सब्सिडी वास्तव में उधारकर्ताओं के बीच क्रेडिट व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद करती है ?

सब्सिडी क्या है ?

साधारण शब्दों में सब्सिडी आमतौर पर सरकार द्वारा किसी व्यक्ति, व्यवसाय या संस्था को दिया जाने वाला लाभ है।

सब्सिडी के क्या फायदे हैं ?

सब्सिडी सरकार द्वारा व्यक्तियों या व्यवसायों को नकद अनुदान या टैक्स ब्रेक के रूप में दिया जाने वाला एक प्रोत्साहन है जो कुछ वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति में सुधार करता है। मूल रूप से, सरकार द्वारा विशिष्ट उद्योगों को सब्सिडी प्रदान की जाती है, जिसका उद्देश्य उत्पादों और सेवाओं की कीमतों को कम रखना है ताकि लोग उन्हें वहन कर सकें और उत्पादन और खपत को प्रोत्साहित कर सकें।

सब्सिडी के लाभ

1. कीमतें कम करना और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना

वे विशेष रूप से ईंधन की कीमतों जैसे उत्पादन लागत इनपुट के क्षेत्र में लागू होते हैं, खासकर जब वैश्विक कच्चे तेल की कीमतें बढ़ रही हैं। कई देश कीमतों को बढ़ने से रोकने के लिए ईंधन की लागत पर सब्सिडी देते हैं।

2. उद्योगों की दीर्घकालिक गिरावट को रोकना

ऐसे कई उद्योग हैं जिन्हें जीवित और कार्यात्मक रखा जाना चाहिए, जैसे मछली पकड़ना और खेती करना क्योंकि वे आबादी का समर्थन करने के लिए आवश्यक हैं। कई नए और तेजी से बढ़ते उद्योगों को भी सब्सिडी मिलने से फायदा हो सकता है।

3. माल की अधिक आपूर्ति

सरकार पानी, भोजन और शिक्षा जैसी वस्तुओं और सेवाओं तक अपनी आबादी की पहुंच बढ़ाना चाहती है। इसलिए, एक प्रोत्साहन प्रदान करती है जो टैक्स क्रेडिट या सीधे नकद के रूप में हो सकता है। सकारात्मक बाह्यता वाले बाज़ार आमतौर पर ऐसे लाभ प्राप्त करने वाले होते हैं।

सब्सिडी के प्रकार

1. उत्पादन सब्सिडी

किसी उत्पाद के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रकार की सब्सिडी प्रदान की जाती है। निर्माताओं को अपने उत्पादन में वृद्धि करने के लिए सरकार अपने उत्पादन में वृद्धि करते हुए अपने खर्च को कम करने के लिए इसके कुछ हिस्सों की भरपाई करती है। नतीजन, उत्पादन और खपत बढ़ती है, लेकिन कीमत वही रहती है। इस तरह के प्रोत्साहन का दोष यह है कि यह अति उत्पादन को बढ़ावा दे सकता है।

2. खपत सब्सिडी

यह तब होता है जब सरकार भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और पानी की लागतों की भरपाई करती है।

3. निर्यात सब्सिडी

एक स्पष्ट तथ्य यह है कि कोई देश या राज्य अपने निर्यात से कमाता है और निर्यात उसकी अर्थव्यवस्था को संतुलित करने में मदद करता है। इसलिए निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार लागत में सब्सिडी देती है। हालांकि, इसका आसानी से दुरुपयोग किया जा सकता है, विशेष रूप से निर्यातकों द्वारा, जो अपने माल की कीमतों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं ताकि उन्हें एक बड़ा प्रोत्साहन प्राप्त हो, अंततः करदाताओं की कीमत पर अपना मुनाफा बढ़ाना।

4. रोजगार सब्सिडी

यह प्रोत्साहन सरकार द्वारा कंपनियों और संगठनों को नौकरी के अधिक अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाने के लिए दिया जाता है।

बैंकिंग परिदृश्य में सब्सिडी दो तरह से दी जाती है । एक अग्रिम (फ्रंट एंड सब्सिडी) और दूसरा बाद में दी जाने वाली (बैंक एंड) सब्सिडी।

फ्रंट एंड सब्सिडी साधारण रूप से प्रधान मंत्री इम्प्लॉइमेंट गारंटी स्कीम के तहत ऐसे उधारकर्ताओं को दी जाती है जो पूरी तरह से नए रोजगार को शुरू करने के लिए ऋण की मांग करते हैं। ऐसे उद्यमियों को केवीआईसी के तहत कुछ ज़रूरी प्रमाणपत्र जारी किए जाते हैं जिसके बाद लोन वितरण के पश्चात बैंकों को सब्सिडी की राशि अग्रिम रूप से मिल जाती है लेकिन यह 3 वर्ष तक मीयादी जमा के रूप में रखी जाती है। सरकार द्वारा यह योजना नए उद्यमियों की पूंजी की कमी को ध्यान में रखते हुए लायी थी। इसके अंतर्गत विनिर्माण इकाई के लिए रु. 25.00 लाख और सेवा इकाई के लिए रु. 10.00 लाख राशि ऋण के रूप में दी जा सकती है। इसमे अलग-अलग तरह के लाभार्थियों को अलग-अलग प्रतिशत में सब्सिडी दी जाती है। व्यक्तिगत उद्यमी, संस्थाएं, सहकारी समितियां, स्वयं सहायता समूह, ट्रस्ट इसके लाभार्थी हैं। पीएमईजीपी योजना के तहत, अब तक 8 लाख से अधिक परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिसके तहत 68 लाख से अधिक लोगों को रु. 21,000 करोड़, 'मार्जिन मनी सब्सिडी' के वितरण से देश भर में रोजगार के अवसर प्रदान किए गए हैं।

फ्रंट एंड सब्सिडी की तरह बैक एंड सब्सिडी भी देश के विकास में पूरी तरह से योगदान दे रही है । बैक एंड सब्सिडी क्या है ?

बैक एंड सब्सिडी सरकारी वित्तीय सहायता का एक रूप है जो किसी विशेष उद्योग या व्यवसाय को प्रदान की जाती है, लेकिन कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद ही भुगतान किया जाता है। यह फ्रंट एंड सब्सिडी के विपरीत है, जिसका भुगतान किसी भी शर्त के पूरा होने से पहले किया जाता है। बैक एंड सब्सिडी का एक उदाहरण ऋण गारंटी है। इस मामले में, सरकार एक निजी ऋणदाता द्वारा किसी व्यवसाय को दिए गए ऋण की गारंटी देती है, लेकिन व्यवसाय को ऋण केवल कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद ही मिलता है, जैसे कि एक निश्चित संख्या में भर्ती निकालना या एक निश्चित स्तर का राजस्व प्राप्त करना। एक अन्य उदाहरण बैक एंड सब्सिडी का टैक्स क्रेडिट है। इस मामले में, कोई व्यवसाय केवल कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद ही टैक्स क्रेडिट प्राप्त करने के लिए पात्र है, जैसे कि कुछ प्रकार के उपकरणों में निवेश करना या एक निश्चित संख्या में कर्मचारियों को काम पर रखना। कुल मिलाकर, बैक एंड सब्सिडी और फ्रंट एंड सब्सिडी के बीच मुख्य अंतर यह है कि पहले का भुगतान कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद किया जाता है, जबकि बाद वाले का भुगतान इस बात की परवाह किए बिना किया जाता है कि कोई शर्त पूरी हुई है या नहीं। भारत सरकार द्वारा बैंक ऋणों के लिए दी जाने वाली सब्सिडी आमतौर पर बैक एंड होती है। इसका मतलब है कि सब्सिडी राशि परियोजना के पूरा होने पर ही समायोजित की जाएगी।

संबंधित बैंक/राज्य वित्तीय संस्थान योजना के तहत परियोजनाओं को मंजूरी देते समय अपने स्वयं के मूल्यांकन मानदंडों का पालन कर सकते हैं। सब्सिडी की मंजूरी/दावे के लिए वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान किया गया मूल्यांकन नोट अनिवार्य रूप से वही होना चाहिए जो सावधि ऋण की मंजूरी का आधार बनता है। परियोजना को ऋण की मंजूरी की तारीख से दो साल की अवधि के भीतर लागू किया जाना चाहिए। बैक एंड सब्सिडी का भुगतान ऋण के नियमों और शर्तों के अनुसार/या अनुमोदित व्यवहार्यता सह परियोजना रिपोर्ट, जैसा भी मामला हो, के अनुसार परियोजना के सफलतापूर्वक पूरा होने के बाद किया जाएगा।

बैक एंड सब्सिडी का एक उदाहरण प्रधानमंत्री रोजगार योजना (पीएमआरवाई) है। इसके अंतर्गत ब्याज सब्सिडी परियोजना लागत का 15% होगी और प्रति माह ₹ 15,000 तक सीमित होगी।

प्रधान मंत्री आवास योजना भी बैक एंड सब्सिडी का एक उदाहरण है, रुपये 3 लाख से 18 लाख तक की वार्षिक आय वाला कोई भी परिवार आवेदन कर सकता है। देश के किसी भी हिस्से में आवेदक या परिवार के अन्य सदस्य के पास पक्का मकान नहीं होना चाहिए। आवेदक को अधिकतम 20 वर्षों की अवधि के लिए 9 लाख रुपये (मध्य आय समूह-ख) तक की आवास ऋण राशि और ब्याज सब्सिडी के लिए 12 लाख रुपये (मध्य आय समूह-ख) तक की आवास ऋण राशि दी जाएगी। प्रारंभ में, पीएमएवाई योजना 2022 तक समाज के सभी आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए आवास प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी। हालाँकि, मिशन को 31

एक शब्द है पूंजीगत बैक एंड सब्सिडी

दिसंबर, 2024 तक बढ़ा दिया गया है। पिछले साल के आंकड़ों के मुताबिक सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अब तक 17.68 लाख लाभार्थियों को 41,415 करोड़ रुपये की ब्याज सब्सिडी वितरित की है । इसके तहत हाउसिंग फॉर ऑल भी संभव हो पाया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2023-24 में प्रधान मंत्री आवास योजना के लिए आवंटन 66% बढ़ाकर 79,000 रुपये कर दिया। पिछला बजट आवंटन 48,000 करोड़ रुपये था।

जब सरकार किसी विशेष प्रकार की क्षेत्रीय गतिविधि को बढ़ावा देना चाहती है जैसे कि नवीकरणीय ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाने के लिए सौर संयंत्र की स्थापना सब्सिडी उद्यमियों और व्यावसायिक समूहों को अपने संयंत्र प्रतिष्ठानों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। व्यवसाय को अधिक आकर्षक बनाने के लिए कुछ वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

शिक्षा ऋण सब्सिडी (केंद्रीय क्षेत्र ब्याज सब्सिडी योजना, 2009)

सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी छात्र को गरीब होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर से वंचित न किया जाए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) ने 2009 में ''केंद्रीय क्षेत्र ब्याज सब्सिडी योजना'' (सीएसआईएस) नामक एक योजना शुरू की। यह योजना बिना किसी संपार्श्विक प्रतिभूति के भारत में तकनीकी/व्यावसायिक पाठ्यक्रम करने के लिए शिक्षा ऋण पर अधिस्थगन अवधि के दौरान पूर्ण ब्याज सब्सिडी प्रदान करती है। वे छात्र जिनकी वार्षिक सकल अभिभावक/पारिवारिक आय रुपये 4.5 लाख तक है, इस योजना के तहत पात्र हैं। मौजूदा योजना को 28 मार्च, 2018 को कैबिनेट की मंजूरी के साथ संशोधित किया गया है।

यह योजना सभी अनुसूचित बैंकों द्वारा अपनाई गई है और भारतीय बैंक संघ की मौजूदा मॉडल शैक्षिक ऋण योजना से जुड़ी हुई है। केवल एनएएसी मान्यता प्राप्त संस्थानों या एनबीए राष्ट्रीय महत्व या केंद्रीय वित्त पोषित तकनीकी (सीएफटीआई) संस्थानों द्वारा मान्यता प्राप्त पेशेवर/तकनीकी कार्यक्रमों से पेशेवर/तकनीकी पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों तक सीमित है। वे व्यावसायिक संस्थान/कार्यक्रम जो एनएएसी या एनबीए के दायरे में नहीं आते हैं, उन्हें संबंधित नियामक निकाय की मंजूरी की आवश्यकता होगी, जैसे मेडिकल पाठ्यक्रमों के लिए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नर्सिंग पाठ्यक्रमों के लिए नर्सिंग काउंसिल ऑफ इंडिया, कानून आदि के लिए बार काउंसिल ऑफ इंडिया की मंजूरी। यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के छात्रों के लिए लागू है, यानी ऐसे छात्र जिनकी वार्षिक सकल अभिभावक आय 4.5 लाख रुपये तक है। स्नातक या स्नातकोत्तर या एकीकृत पाठ्यक्रम के लिए सब्सिडी केवल एक बार स्वीकार्य है। योजना के तहत, बिना किसी संपार्श्विक प्रतिभूति और तीसरे पक्ष की गारंटी के अधिकतम रु. 750000 की राशि में प्रदान की जाती है।

सब्सिडी के नुकसान

1. आपूर्ति की कमी

हालांकि सब्सिडी के लाभों में से एक माल की अधिक आपूर्ति है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कम कीमतों से मांग में अचानक

वृद्धि हो सकती है, जिसे कई उत्पादकों को पूरा करना बहुत मुश्किल हो सकता है। अंततः, इससे बहुत अधिक मांग हो सकती है जो कीमतों में वृद्धि का कारण बनती है।

2. सफलता मापने में कठिनाई

सब्सिडी आमतौर पर प्रभावी और सहायक होती है। हालांकि, अगर सरकार सब्सिडी का उपयोग करने में अपनी सफलता की रिपोर्ट बनाती है, तो यह एक अलग कहानी होगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि सब्सिडी की सफलता का आकलन करना कठिन है।

छोटी अवधि में सब्सिडी अच्छी होती है। लेकिन लंबे समय में यह उतनी ही हानिकारक है।

हमारे देश में प्रत्येक वर्ष सामाजिक अवसंरचना लेखापरीक्षा होती है जिसमें निर्णय होता है कि किस क्षेत्र में सब्सिडी दी जानी चाहिए। जैसे की इस साल इलेक्ट्रिक कार सब्सिडी दी जा रही है। इसका फायदा यह है कि खरीद के समय रोड टैक्स माफ कर दिया जाता है। पंजीकरण शुल्क में छूट नए वाहन की खरीद पर लागू एकमुश्त पंजीकरण शुल्क माफ कर दिया गया है। आयकर लाभ किसी व्यक्ति द्वारा सरकार को देय कर राशि पर कटौती के रूप में प्रदान किया जाता है। बैटरी चालित दोपहिया वाहनों के लिए, इस योजना के तेहत पात्रता मानदंड न्यूनतम सीमा 80 किमी और न्यूनतम शीर्ष गति 40 किमी/घंटा है। ₹1.5 लाख से कम के इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन लोन सब्सिडी के पात्र हैं। स्वच्छ और हरित परिवहन को बढ़ावा देने के साधन के रूप में भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) पर सब्सिडी शुरू की गई है । फेम 2 सब्सिडी में कटौती के कदम से एथर 450X, ओला S1 प्रो और TVS iQube जैसे लोकप्रिय मॉडलों की कीमत पर असर पड़ेगा, साथ ही अन्य इलेक्ट्रिक स्कूटर जिन्हें अब तक लाभ मिल रहा है। संशोधित फेम 2 योजना के तहत, इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के लिए सब्सिडी ₹15,000/kWh से घटाकर ₹10,000/kWh कर दी गई है।

सब्सिडी आमतौर पर सरकार से नकद भुगतान या लक्षित कर कटौती के रूप में व्यक्तियों या फर्मों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भुगतान है। आर्थिक सिद्धांत में, सब्सिडी का उपयोग अधिक आर्थिक दक्षता प्राप्त करने के लिए बाज़ार की विफलताओं और बाह्यताओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है। मूल रूप से, सरकार द्वारा विशिष्ट उद्योगों को सब्सिडी प्रदान की जाती है, जिसका उद्देश्य उत्पादों और सेवाओं की कीमतें कम रखना है ताकि लोग उन्हें वहन करने में सक्षम हो सकें और उत्पादन और खपत को प्रोत्साहित कर सकें।

ये माना जाता था विकास को बढ़ावा देने के लिए सोचे जाने वाले क्षेत्रों की ओर सस्ते ऋण को प्रसारित करके पूरा किया जा सकता है।

हस्तक्षेप के लक्ष्य सुविचारित थे, लेकिन सब्सिडी अधिकांश भाग के लिए काम नहीं की। कुछ हद तक यह अपरिहार्यता मुख्य रूप से इसलिए आई क्योंकि पैसे के लिए ब्याज सब्सिडी उधार ने जमा किए गए धन की दरों को नीचे धकेल दिया। वह निराश बचतकर्ता की क्षमता, ऋण उद्देश्यों के लिए धन के प्रवाह को सुखा रहे हैं।

हालांकि, रियायती ऋण अक्सर अपने लक्ष्य से चूक गए हैं। बड़ी संख्या में गरीब कर्जदार को छोटे ऋण देना महंगा और जोखिम भरा है। परिणामस्वरूप, उधार देने वाली संस्थाओं ने बड़े पैमाने पर कम जोखिम वाले उधारकर्ता को ऋण देने की प्रवृत्ति दिखाई है। व्यवहार्य उधार के निर्माण में ऐसे संस्थान महत्वपूर्ण हैं। ऐसे संस्थानों को अपने संचालन को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि सही समय पर **योग्य उधारकर्ताओं के बीच सब्सिडी वितरण से क्रेडिट व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।**

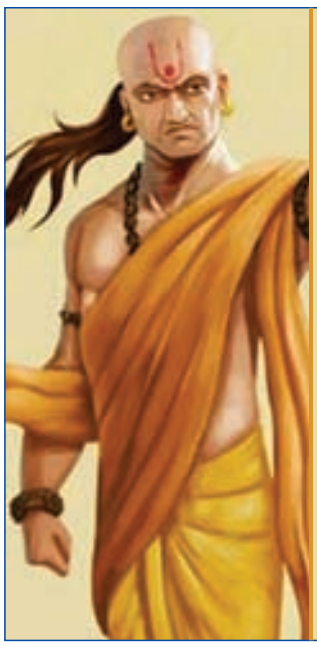

जब आप किसी काम की शुरुआत करते हैं तो असफलता से न डरें और उस काम को ना छोड़ें। जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं वो सबसे प्रसन्न होते हैं और उन्हीं की उन्नति होती है।

– आचार्य चाणक्य

आलेख

बैंकिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स : फायदे व चुनौतियां

हर्षिया
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, चंडीगढ़

परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स हमारी जानकारी के बिना भी हमारे रोजमर्रा के जीवन में घुस गए हैं। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन शॉपिंग साइटें पहले की खोजों या ब्राउज़िंग इतिहास के आधार पर उत्पादों को प्रदर्शित करना शुरू कर देती हैं।

एआई और डेटा एनालिटिक्स जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं, चाहे वह खर्च करने का रहा हो या बचत, यात्रा या काम का माहौल, स्वास्थ्य देखभाल, मनोरंजन, या खरीदारी। आप किसी भी क्षेत्र का नाम लें, एआई और डेटा एनालिटिक्स ने हमारे जीवन को बड़े पैमाने पर प्रभावित करने का काम किया है।

बैंकिंग कोई अपवाद नहीं है जहां एआई और डेटा एनालिटिक्स ग्राहक अधिग्रहण से लेकर वसूली तक के लिए हर क्षेत्र में प्रवेश कर गया है। एआई मनुष्यों के समान बुद्धि प्रदर्शित करने के लिए मशीनों की क्षमता को संदर्भित करता है। यह संज्ञानात्मक कार्यों को शामिल करता है जो मनुष्यों के एकाधिकार में माना जाता था, जो अब कंप्यूटिंग में प्रगति के कारण संभव हुआ है।

एआई और डेटा एनालिटिक्स प्रबंधकीय जानकारी के लिए अग्रणी विशाल डेटा के प्रसंस्करण को सक्षम करते हैं, इस प्रकार सुविधाजनक होते हैं और उससे निर्णय लेना आसान रहता है।

डेटा एनालिटिक्स, जैसा कि नाम से पता चलता है, में डेटा का विश्लेषण शामिल है, जो सार्थक जानकारी के लिए अग्रणी है, जो बेहतर निर्णय लेने में सहायता करता है। बैंक अपने व्यवसाय के हिस्से के रूप में भारी डेटा प्राप्त करते हैं, जिससे अपने बाजार में हिस्सेदारी को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान व्यावसायिक वातावरण, कड़ी प्रतिस्पर्धा द्वारा चयनित, सभी बैंकों द्वारा उत्पाद की पेशकश को समान रूप से प्रकट करता है।

एआई और डेटा एनालिटिक्स के कार्यान्वयन की बैंकिंग क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं, ग्राहक अनुभव को बढ़ाने से लेकर, निगरानी और अनुपालन के लिए आवश्यक होती है। इन उपकरणों की सहायता से, बैंक एक आकार-फिट रणनीति के बजाय व्यक्तिगत ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करने वाले उत्पादों को शुरु कर सकते हैं।

यह पहलू बैंकों के साथ-साथ ग्राहकों के लिए एक जीत की स्थिति सुनिश्चित करता है क्योंकि यह बेहतर रूपांतरण को बढ़ाता है बैंक की ओर से विपणन प्रयास के लिए दर और ग्राहकों के लिए एक बेहतर मूल्य प्रस्ताव ग्राहकों को उनकी ज़रूरतों के अनुरूप उत्पादों की पेशकश मिलती है।

बैंक में डेटा का विश्लेषण, डेटा की जटिलता के कारण चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे एआई और डेटा एनालिटिक्स द्वारा आसानी से किया जा सकता है

1. पूराने व्यवसाय को बनाए रखते हुए नया व्यवसाय प्राप्त करना:-

नया व्यवसाय लाना आवश्यक है क्योंकि यह स्थिर व लगातार आय सुनिश्चित करता है, जो किसी संस्था के विकास और अस्तित्व के लिए आवश्यक है। एआई और डेटा एनालिटिक्स लीड और उनके रूपांतरण उत्पन्न करने के लिए काम आते हैं। उत्पादों के लिए ग्राहकों को लक्षित करने वाले इन उपकरणों की सहायता से आसान हो जाते हैं क्योंकि बिक्री टीम उन तक आसानी से पहुंच सकती है

ग्राहक वरीयताओं के आधार पर, ये उपकरण व्यक्तिगत स्तर पर भी उत्पाद की स्थिति का अनुकूलन करते हैं। उदाहरण के लिए, क्रेडिट कार्ड पर एक लॉयल्टी कार्यक्रम के अधिकांश बैंक डेटा एनालिटिक्स के उपयोग के माध्यम से कार्ड के उपयोग को बढ़ा सकते हैं। बैंक ग्राहक प्राथमिकताओं के आधार पर लॉयल्टी कार्यक्रमों की पेशकश कर सकते हैं जैसे कि यात्रियों के लिए बोनस मील, ऑनलाइन

दुकानदारों के लिए ऑनलाइन खरीदारी के लिए अतिरिक्त छूट और इसी तरह होम लोन के लिए वरिष्ठ नागरिकों को लक्षित करना एक अच्छा प्रस्ताव नहीं है क्योंकि केवल कुछ ही उत्पाद के लिए पात्र होंगे।

डेटा एनालिटिक्स ग्राहक जनसांख्यिकी के आधार पर उत्पाद श्रेणियों का चयन करने के लिए हो सकता है। यह न केवल स्ट्राइक रेट को बढ़ाता है, बल्कि बिक्री के प्रयास को भी कम करता है। उत्पाद की पेशकश के लिए ग्राहक की जनसांख्यिकी का इस तरह का मिलान बेहतर आवश्यकता मूल्यांकन की ओर जाता है जो किसी भी बिक्री प्रक्रिया का पहला कदम है। डेटा एनालिटिक्स के उपयोग के साथ, अन्य बैंकों या तीसरे पक्ष के उत्पादों से क्रेडिट सुविधाओं का लाभ उठाने वाले ग्राहकों के बारे में जानकारी को ग्राहक के लेनदेन इतिहास के माध्यम से बहुत आसानी से पता किया जा सकता है। इसका उपयोग अन्य बैंकों से अच्छे ऋण खाते प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। इसी तरह, यह बीमा और म्यूचुअल फंड उत्पादों को लक्षित करने के लिए लीड प्राप्त कर सकता है।

ग्राहक को बनाए रखने के महत्व को कम नहीं किया जा सकता है क्योंकि नए ग्राहकों को अपने साथ जोड़ने में प्रयास और लागत दोनों शामिल हैं। ग्राहक सेवा बैंकिंग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि ग्राहक बैंक द्वारा प्रदान की गई सेवा की गुणवत्ता द्वारा बैंक के बारे में धारणाएं बनाते हैं।

2. प्रक्रियाओं को सरल बनाना:–

प्रक्रियाओं को सरल बनाकर एआई और डेटा एनालिटिक्स एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं –

सेवा देने के समय में टर्न अराउंड टाइम (टीएटी) किसी ग्राहक को उसके अनुरोध से लेकर उसकी वास्तविक सेवा तक किसी विशेष सेवा प्रदान करने के लिए बैंक द्वारा लिए गए समय को संदर्भित करता है। ग्राहक न केवल बैंक द्वारा प्रदान की गई सेवा को उसकी गुणवत्ता से बल्कि इसकी डिलीवरी के लिए, लिए गए समय से भी आंकते हैं। एआई की संज्ञानात्मक क्षमता से बैलेंस शीट, बैंक स्टेटमेंट और आईटीआर (आयकर रिटर्न) का विश्लेषण करती है। सरकार द्वारा शुरू किया गया '59 मिनट में पीएसबी ऋण' बिंदु है, जो अपने कामकाज के लिए एआई और डेटा एनालिटिक्स का बड़े पैमाने पर उपयोग करता है। उधारकर्ता को आईटीआर, बैंक स्टेटमेंट और जीएसटी रिटर्न जैसे विवरण अपलोड करने की आवश्यकता होती है, जिसके बाद, सिद्धांत रूप में, पात्र उधारकर्ता को ऋण स्वीकृत किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया एआई और डेटा एनालिटिक्स के आधार पर

1 घंटे से भी कम समय में होती है, इसलिए इसे '59 मिनट में पीएसबी लोन' के रूप में नामित किया गया है।

एसएमई (लघु और मध्यम उद्यमों) द्वारा सामना की जाने वाली सबसे बड़ी समस्या वित्तीय लेखा–जोखा को बनाए रखने की है जो किसी भी वित्तीय संस्थान से ऋण प्राप्त करने के लिए एक शर्त है। बिक्री, जीएसटी रिटर्न से कैश फ्लो, या छोटी इकाइयों द्वारा सामना की जाने वाली इस समस्या को दूर करने के लिए बैंक स्टेटमेंट जैसे वित्तीय डेटा को जांचकर स्टेटमेन्ट को तैयार कर सकता है। यह बैंक और ग्राहकों दोनों के लिए एक जीत की स्थिति होगी क्योंकि दोनों की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है, यानी वित्तीय और क्रेडिट सुविधाएं पूरी हो जाती हैं।

ऋण के मूल्यांकन में एआई और डेटा एनालिटिक्स बहुत अधिक है क्योंकि बैंक वित्तीय और बैंक विवरणों का विश्लेषण करने और यहां तक कि ऋण के लिए पात्रता पर काम करने के लिए उचित परिश्रम करने के लिए टर्नअराउंड समय को कम करने के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं। इन उपकरणों का लाभ उठाकर, बैंक ग्राहकों को पूर्व–अनुमोदित ऋण की पेशकश कर रहे हैं, बशर्ते कि निर्धारित नियमों और शर्तों को पूरा किया जा सके।

3. जोखिम प्रबंधन:–

जोखिम प्रबंधन बैंकिंग व्यवसाय का एक अभिन्न अंग है क्योंकि बैंक उधार देने में और निवेश करने में विभिन्न जोखिम व्याप्त हैं। जोखिम से कभी बचा नहीं जा सकता है, लेकिन इसे विभिन्न उपायों के माध्यम से मैनेज किया जा सकता है।

डेटा एनालिटिक्स और एआई जोखिम की पहचान और इसके मैनेजमेंट में बहुत मदद कर सकते हैं। यह बैंक द्वारा निर्धारित नीतियों और मानदंडों के किसी भी उल्लंघन की पहचान करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है। यह एक्सपोजर मानदंडों और शाखा द्वारा अन्य समान अपवादों के उल्लंघन की पहचान करने के लिए कई क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है।

एआई और डेटा एनालिटिक्स द्वारा वित्तीय विश्लेषण मानव त्रुटियों को दूर कर सकता है जिससे उचित क्रेडिट मूल्यांकन और विश्लेषण हो सकता है। क्रेडिट जोखिम के अलावा, ये किसी विशेष क्षेत्र या उत्पाद के उच्च जोखिम के मामले में ट्रिगर के माध्यम से एकाग्रता जोखिम की पहचान करने में सहायता कर हैं।

उदाहरण के लिए, बिना प्रतिभूति के ऋणों में अचानक वृद्धि की पहचान कर सकता है, जो सुरक्षा-आधारित ऋणों की तुलना में जोखिम भरा है और उसमें प्रबंधन द्वारा समय रहते उचित कार्रवाई कर सकता है।

4. निगरानी और वसूली:-

एआई और डेटा एनालिटिक्स समय पूर्व प्रारंभिक चेतावनी द्वारा क्रेडिट निगरानी में मदद कर सकते हैं। एआई और डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से बैंक में समय पूर्व संकेत की रूपरेखा लागू करने निगरानी करने से डिफ़ॉल्ट की संभावना की पहचान करने में मदद मिलती है।

चेकों के बार-बार बाउंस होने, नियमित तदर्थ सुविधाओं का लाभ उठाने, ऋण खाते से भारी नकदी निकासी जैसे संकेतों की एआई के माध्यम से आसानी से निगरानी की जा सकती है। इन कारकों को डिफ़ॉल्ट की संभावना की भविष्यवाणी करने वाले मॉडल को विकसित करने के लिए खाते की व्यवहार्यता पर प्रभाव की गंभीरता के अनुसार वेटेज दिया जा सकता है। इससे न केवल खाते में शुरुआती कमजोरी की पहचान करने में मदद मिलेगी, बल्कि बैंक को उपचारात्मक उपाय करने में भी मदद मिलेगी। इस तरह के विश्लेषण का परिणाम स्टॉक सत्यापन, बिक्री डेटा का विश्लेषण में मदद कर सकता है। उपर्युक्त उपाय न केवल क्रेडिट निगरानी में मदद करेंगे, बल्कि खाते को एनपीए (गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों) में बदलने से

रोकने में भी मदद करेंगे। एआई और डेटा को विभिन्न कारकों जैसे कि उम्र बढ़ने, वसूली पैटर्न / खाते के इतिहास, खाते की संपत्ति श्रेणी का विश्लेषण करने के माध्यम से वसूली में भी आसान किया जा सकता है।

5. धोखाधड़ी की रोकथाम और अनुपालन:-

बैंकों में धोखाधड़ी से न केवल वित्तीय हानि है, बल्कि बैंक की छवि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार वित्तीय वर्ष 2019-2020 में, भारत में बैंकों और वित्तीय संस्थानों में एक लाख से अधिक की धोखाधड़ी की कुल मात्रा ₹ 28,843 करोड़ थी। हालांकि धोखाधड़ी की घटना को पूरी तरह से रोकना असंभव है, निवारक उपाय इसकी कमी में मदद कर सकते हैं। एआई और डेटा एनालिटिक्स चेक और बैलेंस को शामिल करके और धोखाधड़ी-प्रवण क्षेत्रों में अपवादों की पहचान करके धोखाधड़ी का पता लगाने और रोकथाम में मदद कर सकते हैं।

निष्क्रिय खाते में गतिविधि, नकद लेनदेन में वृद्धि। ये न केवल असंगत लेनदेन की पहचान करने में मदद कर सकते हैं, बल्कि लेनदेन की संरचना की तरह कैमोफ़्लैगिंग के कृत्यों का पता लगाने में भी मदद कर सकते हैं। इसका एक विशिष्ट उदाहरण ग्राहक द्वारा पैन नंबर को उद्धृत करने से बचने के लिए ₹ 50,000 से नीचे के कई नकद लेनदेन हों। बैंकों में खातों और लेनदेन की निगरानी एक कठिन कार्य है जो इसे मैन्युअल रूप से करना लगभग असंभव है। एआई और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग खातों और लेनदेन की निगरानी के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, जो धोखाधड़ी के निवारण में मदद करता है।

6. विनियमन और अनुपालन:

अनुपालन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जो डेटा एनालिटिक्स और एआई के माध्यम से सरलीकृत किया जा सकता है। आवश्यक डेटा प्रसंस्करण संग्रह से लेकर सार्थक निष्कर्ष निकालने तक ये उपकरण इसमें मदद कर सकते हैं। बैंकों में नीतियों और प्रक्रियाओं से अपवादों की पहचान करना, विभिन्न एजेंसियों को रिपोर्ट प्रस्तुत करना एक अभिन्न अंग है। अनुपालन का हिस्सा जिसमें डेटा एनालिटिक्स के तत्व और डेटा खनन और एल्गोरिथ्म जैसे एआई रिपोर्ट में मदद कर सकते हैं।

मानव संसाधन कार्य:

डेटा एनालिटिक्स और एआई का उपयोग किसी भी संगठन के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन के प्रबंधन में किया जा सकता है, यानी मानव संसाधन, जो बैंकिंग में सेवा प्रदान करने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सभी कार्यों में इस्तेमाल किया जा सकता है भर्ती, प्लेसमेंट, पदोन्नति मूल्यांकन, प्रशिक्षण आदि।

नौकरी की स्थिति में प्रोफ़ाइल और अनुभव, एआई का उपयोग निर्णय लेने और प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन करने में भी किया जा सकता है। इन उपकरणों के उपयोग के साथ, मानव संसाधन में निर्णय लेने में पूर्वाग्रह को कम किया जा सकता है।

बैंकिंग में डेटा एनालिटिक्स और एआई को लागू करने में चुनौतियां

डेटा एनालिटिक्स और एआई के लाभों को देखते हुए सभी बैंक इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली क्षमताओं और अवसरों के लाभ प्राप्त करने के लिए इसे बड़े पैमाने पर लागू करने की परिकल्पना करते हैं। आइए, हम बैंकिंग क्षेत्र में एआई और डेटा एनालिटिक्स को लागू करने की चुनौतियों पर चर्चा करें।

प्रतिभा: बैंकिंग में एआई और डेटा एनालिटिक्स को लागू करने में यह एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि आवश्यक कौशल के साथ सही प्रतिभा ढूंढना एक बड़ी चुनौती है। यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए और भी अधिक चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उनके पास एक निश्चित वेतन है। एक पेशेवर के लिए बढ़ती मांग के साथ इस क्षेत्र में, प्रतिभा को आकर्षित करना और बनाए रखना बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

डेटा बुनियादी ढांचा: डेटा, जो कि डेटा एनालिटिक्स और एआई के लिए कच्चा माल है। बड़े लेनदेन से निपटने वाले बैंक बड़े डेटा उत्पन्न करते हैं जो ज्यादातर असंरचित होता है, जिसका विश्लेषण एक बोझिल प्रक्रिया है।

सुरक्षा: वाट्सएप्प द्वारा गोपनीयता नीतियों को अपडेट करने पर हाल ही में हंगामा एक ग्राहक के जीवन में डेटा सुरक्षा के महत्व को दर्शाता है। बैंक, एआई और डेटा इंटेलिजेंस को लागू करते समय, डेटा सुरक्षा की चिंता के बारे में इस प्रकरण से सबक ले सकते हैं। ग्राहक अनुकूलित समाधान पसंद करते हैं लेकिन डेटा सुरक्षा की कीमत पर नहीं। इन उपकरणों को लागू करते समय बैंक को सुविधा और सुरक्षा, आउटसोर्सिंग, नैतिक मुद्दों आदि को संतुलित करने जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई बैंकों ने आईटी बुनियादी ढांचे की स्थापना और संचालन के लिए आउटसोर्सिंग को अपनाया है, जो सुरक्षा मुद्दों को जन्म देता है। बैंकों को डेटा और एआई-आधारित समाधान प्रदान करने के लिए ग्राहक डेटा तक पहुंच प्रदान करते समय पर्याप्त सुरक्षा नियंत्रण सुनिश्चित करना होगा। इन उपकरणों पर आधारित उत्पादों की पेशकश करते समय बैंकों को सुविधा और डेटा सुरक्षा का एक अच्छा संतुलन सुनिश्चित करना होगा। दूसरे की कीमत पर एक कारक से समझौता करना केवल बैकफायर करेगा और इसके परिणामस्वरूप ग्राहक असंतोष होगा।

व्यवसाय के विकास के लिए ग्राहकों के ऑनलाइन व्यवहार पर निगरानी नैतिक मुद्दा भी है। बैंकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि कैप्चर किया गया डेटा गोपनीयता के उल्लंघन का कारण नहीं बन रहा है और इसका उपयोग केवल ग्राहक लाभ के लिए किया जाता है। गोपनीयता बैंकिंग का एक अंतर्निहित हिस्सा है क्योंकि बैंकों से अपेक्षा की जाती है कि वे कानूनी अधिकारियों द्वारा आवश्यक को छोड़कर ग्राहकों के बारे में किसी भी जानकारी का खुलासा न करें। डेटा एनालिटिक्स और एआई बड़े पैमाने पर ग्राहक डेटा का उपयोग करते हैं, जिसके लिए बैंकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सुविधा के लिए इस डेटा का उपयोग करते समय वे डेटा सुरक्षा पर समझौता नहीं करेंगे।

विनियमन: डिजिटल बैंकिंग के आगमन के साथ बैंकों का विनियमन बहुत जटिल हो गया है क्योंकि बैंक अब अपने ग्राहकों को सेवा प्रदान करने के लिए विभिन्न चैनलों को नियोजित करते हैं। एक कदम आगे बढ़ते हुए डेटा एनालिटिक्स और एआई विनियमन को और भी जटिल बनाते हैं क्योंकि इसमें डेटा और प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग शामिल है। विनियामक कर्मचारियों को डेटा एनालिटिक्स की निगरानी के लिए तकनीकी कौशल और बैंकों द्वारा किए गए एआई संचालन की आवश्यकता होगी। इसी तरह, मानकों और सीमाओं को तैयार करने की आवश्यकता है ताकि बैंक नैतिक मानकों पर समझौता किए बिना सुविधा प्रदान कर सकें।

समाप्ति:

एआई और डेटा एनालिटिक्स बैंकिंग के हर क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है। बैंकों में एआई और डेटा एनालिटिक्स की व्यापक गुंजाइश है, बैंकिंग परिचालन के दौरान विशाल डेटा उत्पन्न होता है। एआई और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग ग्राहक अधिग्रहण से लेकर क्रेडिट निगरानी और वसूली के लिए हो सकता है। एआई और डेटा एनालिटिक्स द्वारा पेश किए गए फायदे; जैसे दक्षता और लाभप्रदता और ग्राहक सेवा में सुधार, बैंकों को अपनी नियमित व्यावसायिक रणनीति के हिस्से के रूप में इसे शामिल करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। भयंकर प्रतिस्पर्धा का सामना करने वाले बैंक इन उपकरणों का उपयोग अपने उत्पाद और सेवा को अन्यों से अलग दिखाने के लिए कर रहे हैं। जो बैंक प्रभावी ढंग से डेटा और प्रौद्योगिकी का लाभ उठा सकते हैं, उनके प्रतिस्पर्धियों पर बढ़त होगी। इन उपकरणों को लागू करने में बैंकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती सही प्रतिभा की कमी है जिसे आवश्यक कौशल वाले कर्मचारियों को काम पर रखने और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से इन-हाउस कर्मचारियों को तैयार करके दूर किया जा सकता है। एक अच्छा ग्राहक अनुभव प्रदान करते समय, बैंकों को सुरक्षा पहलुओं पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा डेटा एनालिटिक्स और एआई को लागू करने का उद्देश्य व्यर्थ हो जाएगा।

यात्रा वृत्तांत

सफर स्कंदगिरी का

अंकिता कुमारी
परि. अधिकारी
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

मुझे हमेशा से ही घूमना बेहद पसंद है। खास कर ट्रेकिंग वो भी खास दोस्तों के साथ। जब भी मौका मिलता है, निकल पड़ती हूँ दोस्तों के साथ किन्हीं बीहड़-वीरान रास्तों पर या पहाड़ों की ओर। कॉलेज के दिनों में घूमने का मौका तो बहुत मिला पर कभी पहाड़ों पर चढ़ने का सपना पूरा नहीं हो सका। एक बार जोश-जोश में मैंने पर्वतोरोहण के कोर्स में एडमिशन लेने का भी सोच लिया था पर कुछ विपरीत परिस्थितियों के कारण उसे बीच में ही छोड़ना पड़ा। बैंक में आने के बाद मुझे पहली पोस्टिंग बेंगलूरु में मिली तो मुझे लगा घर से तो बहुत दूर हैं, पर हां यहां एडवेंचर्स ट्रिप के बहुत सारे मौके मिलेंगे। फिलहाल ज्यादा तो घूमना नहीं हुआ है। पर हां मैं एक रोमांचक यात्रा को आप सबके साथ साझा करने जा रही हूं। एक दिन अचानक ही मेरे मित्र ने फोन करके कहा स्कंदगिरी ट्रेकिंग का प्लान बन रहा है, साथ चल रही हो ना। थोड़ी व्यस्तता तो थी पर फिर मैंने सोचा ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता सभी दोस्त एक साथ वो भी ट्रेकिंग के लिए। मैंने बिना देरी किए हां कर दिया। फिर क्या था हम ट्रेकिंग की तैयारी में लग गए। हमारे पास सोने के लिए ज्यादा समय नहीं था क्योंकि स्कंदगिरी बेंगलूरु से लगभग 65 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हम केएसआरटीसी द्वारा संचालित बस भी ले सकते थे, जो दोनों गंतव्यों के बीच नियमित अंतराल पर चलती है। बस हमें चिकबल्लापुर में छोड़ती, जो मार्ग का अंतिम पड़ाव है। उस बिंदु से, स्कंदगिरी तक पहुंचने के लिए पैदल यात्रा भी की जा सकती है या स्टॉप से 15 मिनट की दूरी पर पहाड़ियों की तलहटी में छोड़ने के लिए एक ऑटो किराए पर लिया जा सकता है। चूंकि हम आठ ही लोग थे तो हमने बाइक से ही जाने की योजना बनाई। ट्रेकिंग की कहानी को साझा करने से पूर्व स्कंदगिरी के विषय में थोड़ा बताती हूँ ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि यह

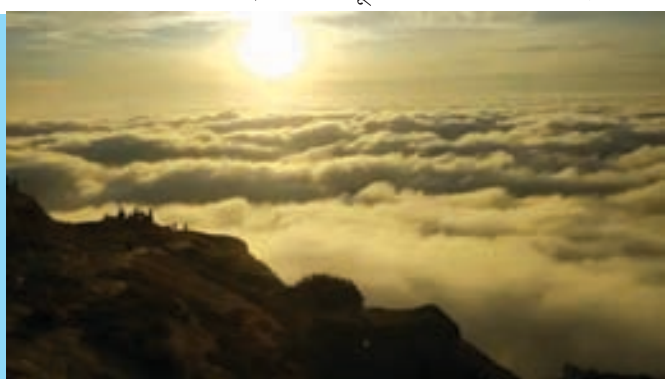

क्यों ट्रेकर्स के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। स्कंदगिरि, जिसे ऐतिहासिक रुप से कलारबेट्टा या कलावरा दुर्गा के नाम से भी जाना जाता है। यह कर्नाटक राज्य में स्थित एक पर्वतीय प्राकृतिक स्थल है, जो कि यात्रा प्रेमियों को आकर्षित करता है। यह स्थान पर्वतारोहण के शौकीनों के लिए विशेष रूप से मशहूर है, क्योंकि यह अनुभव के लिए बहुत रोमांचकारी है। 'स्कंदगिरी' की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अप्रैल से जून और नवंबर से मार्च के बीच का है। इस दौरान, मौसम काफी सुहाना होता है और वातावरण परिवेशीय रंगों के सुंदर प्रदर्शन में बदल जाता है। जुलाई से अक्टूबर तक पहाड़ी की चोटी पर बारिश का मौसम होता है, जिससे 'स्कंदगिरी' की यात्रा करते समय बचना चाहिए। इस दिलचस्प और रोमांचक यात्रा की कुल दूरी लगभग 8 किमी है। यह 1450 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

इस रोमांचक यात्रा के लिए हम लगभग 2 बजे सुबह-सुबह बाइक-स्कूटी से निकले। क्योंकि 'स्कंदगिरी' की पहाड़ी से सूर्योदय नहीं देखा तो फिर क्या ही देखा। जब हम सुबह करीब 3:45 तक बेस पर पहुंचे तब वहां पहले से ही काफी भीड़ जमा थी। हमने अपने वाहन पार्क किए और बेस कैंप की ओर चल दिए।

ट्रेक के शुरुआती बिंदू पर देवी पार्वती और कई स्थानीय देवताओं का वह मंदिर ही 'स्कंदगिरी' के सबसे अद्भुत आकर्षणों में से एक है। इसकी एक मज़बूत और मनमोहक आभा है जो हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देती है। हमने भी ऐसा सुन रखा था कि मंदिर में प्रवेश करते ही आप एक आध्यात्मिक कंपन महसूस करते हैं और लगभग सभी ट्रेकर्स चढ़ाई शुरू करने से पहले मंदिर में माथा टेकते हैं और आशीर्वाद लेते हैं। पर उस वक्त किसी कारणवश गेट बंद होने के कारण हमने बाहर से ही माथा टेक कर आशीर्वाद लिया।

ट्रेकिंग सुबह चार बजे से शुरु होती है पर ट्रेकिंग करने से पूर्व वन विभाग से ट्रेक करने की अनुमति प्राप्त करनी होती है। हमने ऑनलाइन ही टिकट बुक कर ली थी। जैसे ही चार बजे, वन अधिकारी ने हमारी टिकट जांच कर, हमें ट्रेक पर आगे बढ़ने की अनुमति दे दी।

हमने ट्रेकिंग लगभग चार बजे शुरु कर दी थी। उस वक्त के प्राकृतिक दृश्य का जितना भी वर्णन किया जाए शायद कम ही होगा या यूं कहुं तो शायद उस खूबसूरती को शब्दों में बांधना कठिन है। हां यदि कोई कवि हो तो वह खुबसूरती की एक भी छटां को बिना अपने कविता में बांधे रुक ही नहीं सकता। एक कविता की कुछ पंक्तियों से इसकी अलौकिक सुंदरता का वर्णन किया जा सकता है, **''चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में। स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है अवनि और अंबल तल में।।''** चांदनी रात होने के कारण थोड़ा-थोड़ा तो हमें दिख रहा था पर ट्रेकिंग करते समय अपने कदमों पर नज़र रखना अतिआवश्यक होता है। चूंकि यहां बहुत सारी चट्टानें और फिसलन भरे ढ़ीले बजरी वाले इलाके हैं, इसलिए चढ़ाई और उतराई दोनों के दौरान सावधानी बरतना आवश्यक है। ऊपर से घने जंगल होने के कारण जानवरों का भी डर था, खासकर सांप व बिच्छु। फिर क्या था हम सबने अपना-अपना फोन निकाला और पूरे जोश के साथ और ठंडी हवा का आनंद उठाते हुए हम एक-एक कर आगे बढ़ने लगे।

ट्रेकिंग का पूरा रास्ता काफी खड़ी एवं चट्टानी इलाके वाला था, जो घनी झाड़ियों से घिरा हुआ है। यूं कहे तो पूरा रास्ता ही पथरीला, घनी झाड़ियों व जंगली फूलों से घिरा हुआ है। इसी कारण हम इस ट्रेक को मध्यम से कठिन की श्रेणी का मानते हैं। शुरुआत में तो हम बड़े ही तेजी से चल रहे थे जैसे चोटी पर पहुंचकर ही दम लेंगे। पर मुश्किल से 3-4 किमी लगातार ट्रेकिंग करने के बाद लगभग सभी की हालत खराब हो गई। इसीलिए यह अक्सर सुझाव दिया जाता है कि ट्रेक के दौरान पर्याप्त भोजन व पानी अपने साथ रखें। मैंने 2-3 बार ट्रेकिंग किया है, परंतु बाकि सब ट्रेकिंग से यह भिन्न था क्योंकि अक्सर हमें पहाड़ों पर एक दो दुकान मिल ही जाया करती है जहां कुछ नहीं तो कम से कम पानी ज़रुर मिल जाता है। पर 'स्कंदगिरी' के पहाड़ों पर ऐसी कोई सुविधा नहीं है। आपको न हीं बीच रास्ते में न हीं ऊपर चोटी पर पहुंचने पर कुछ भी खाने-पीने की सामग्री मिलेगी। चूँकि लगभग सभी थक गए थे इसलिए एक छोटा सा ब्रेक लेकर थोड़ा-थोड़ा पानी व ग्लूकोज हम सबने पिया ताकि हमारा शरीर हाईड्रेटेड रहे और ज्यादा दूर तक चल सकें। हांलाकि सभी की इच्छा हो रही थी थोड़ा और देर आराम कर लिया जाए पर हम ज्यादा देर तक नहीं रुक सकते थे क्योंकि यदि ज्यादा देर रुकते तो सूर्योदय को मिस कर देते। इसलिए हम सब ने बस 5-6 मिनट रुककर एक बार फिर पूरे जोश में हमने चढ़ाई शुरु कर दी। हांलाकि यात्रा करना हमेशा मज़ेदार होता है पर जैसे-जैसे हम ऊपर की ओर अग्रसर हो रहे थे तब इतने ऊंचे पहाड़ पर चढ़ते समय गुरुत्वाकर्षण से लड़ते हुए ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे शरीर का सारा ग्लूकोज अचानक खत्म हो गया है।

कभी हमने जय माता दी का जयकारा लगाकर तो कभी एक दूसरे की टांग खिंचाईं कर एक दूसरे का हौसला बढ़ाया। बीच-बीच में कुछ फोटों खिंचवाने के बहाने थोड़ा ब्रेक ले लेते। तो कभी मन पसंदीदा गाना बजा लेते और पूरे जोश के साथ चढ़ाई करते हुए हम अंततोगत्वा 'स्कंदगिरी' की चोटी पर पहुंच ही गए। ऐसे करते-करते हमने हार नहीं मानी एक दूसरे का हौसला बढ़ाते हुए फाइनली हम 'स्कंदगिरी' की चोटी पर पहुंच ही गए।

परंतु सच बता रही हूँ कि जैसे ही एक बार आप शिखर पर पहुंच जाते हैं तो विश्वास कीजिए आप वास्तव में सातवें आसमान पर होने की अनुभूति करेंगे। ऐसा लग रहा था कि मानो हम बादलों के बीच में आ गए हों। चारों ओर दूधिया बादल तैर रहे थे। हवा का तो क्या ही कहना इतनी तेज थी कि यदि किनारे पर कोई व्यक्ति बिना कुछ पकड़े खड़ा हो तो वह पक्का डगमगा कर गिर सकता है। जितनी गर्मी चढ़ने के दौरान लग रही थी अब उतना ही ठंडेपन का एहसास हो रहा था। ठंड से मानों हड्डियां तक कांप रहीं हों। इन सब के बीच वो सूर्योदय का होना... चूंकि हमने सूर्योदय तक पर्वतोरोहण समाप्त कर लिया था तो सूर्योदय के दौरान प्रकृति में जो भी गतिविधियां होती है उनका हमने खूब आनंद उठाया। कैसे धीरे-धीरे आकाश के रंग पहले स्लेटी फिर थोड़ी-थोड़ी लालिमा और फिर गहरे सुनहरे रंगो के सफर का हमने खूब आनंद उठाया। सूर्योदय का दृश्य इतना सुन्दर व मनमोहक था कि उसे कुछ पल के लिए निहारने का मन कर रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे हम सब कुछ क्षण के लिए अपने सभी दुखों को बिल्कुल भूल गए हों। सूर्योदय ने हम सबके अंदर एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया हो जिससे सभी का मन अत्यंत प्रसन्न हो गया था।

वैसे तो सबकी अपनी-अपनी अनुभूति होती है पर मुझे ट्रेकिंग पूरा करने के बाद ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो एक बार फिर कुछ नया

करने का हौसला मिल गया हो। जीवन में एक नई ताज़गी आ गई हो। सपने को पूरा करने का एक जुनून मिल गया हो। आज़ाद पक्षी की भांति खुद को महसूस कर रही थी। सब खुद को प्रकृति की गोद में देख कर बहुत आनंदित थे। आसपास की विशाल पर्वत श्रृंखलाओं और शानदार हरियाली के साथ-साथ पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ इस खूबसूरती में मानो चार चांद लगा रही हों। सुमित्रानंदन पंत की एक कविता याद आ रही है....

प्रथम रश्मि का आना रंगिणी!

तूने कैसे पहचाना?

कहां, कहां हे बाल-विहंगिनी!

पाया तूने वह गाना ?

सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में,

पंखों के सुख में छिपकर,

ऊंघ रहे थे, घूम द्वार पर,

प्रहरी-से जुगनू नाना।

इस ट्रेकिंग पर हमें बंदरों की चहलकदमी भी देखने को मिली, शुरुआत में तो बहुत डर लग रहा था पर हमें एक ट्रेकर ने बता दिया था कि घबराने की कोई बात नहीं। यदि हम उन्हें ना छेड़े तो वो हमें परेशान नहीं करेंगे और हां उनके सामने बस कुछ खाने पीने का सामान नहीं निकालना है। फिर क्या था हम भी बंदर के डर को छोड़कर आराम से प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाने में मशगूल हो गए। ये तो हो गई प्राकृतिक सौंदर्य की बात परंतु इस ट्रेकिंग के आकर्षण का एक गौरवशाली अतीत है। 'स्कंदगिरी' पहाड़ी की चोटी पर हमें 18वीं सदी के किले के खंडहर मिले, जिसका कर्नाटक के इतिहास में एक विशेष स्थान है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह में टीपू सुल्तान ने इस किले को एक गढ़ के रूप में इस्तेमाल किया था। हांलाकि किले का एक बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है, लेकिन इसके खंडहरों की सुंदरता कई पर्यटकों को आकर्षित करती है। हांलाकि, मैसूरु साम्राज्य के शासकों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ अपना विद्रोह खो दिया, जिन्होंने 1791 ई.पू. में किले पर विजय प्राप्त की और उसे नष्ट कर दिया। कुछ दीवारें आज भी मज़बूती से खड़ी हैं जो इस किले की संरचना का अंदाजा देती हैं। इतना ही नहीं 'स्कंदगिरी' की शिखर पर एक प्राचीन मंदिर भी स्थित है जो अपने अनोखे डिजाइन के लिए जाना जाता है। यह भगवान शिव का मंदिर है। चढ़ाई शुरु करने से पूर्व भी हमने बेस प्वाइंट पर माथा टेका था और चढ़ाई खत्म करने पर भी हमने मंदिर में माथा टेका।

ट्रेकिंग के दौरान हमने ज्यादा कुछ खाया नहीं था और अब सभी को भूख भी लग ही गई थी, फिर हमने बंदरों से दूर जाकर एक जगह बैठकर कुछ खाया-पिया और फिर पुन: नीचे जाने के लिए चल पड़े। ट्रेकिंग को लेकर अक्सर कहा जाता है कि चढ़ना जितना कठिन होता है उतना उतरना नहीं होता। पर सच बताऊं तो मुझे उतरना ज्यादा कठिन लग रहा था। पर महादेव का नाम लेकर हमने सुरक्षित अपने ट्रेकिंग को 4 से 5 घंटे के भीतर आसानी से पूरा किया और ढ़ेर सारी तसवीरें भी खींची। वो कहते हैं ना कि जिंदगी में तस्वीर लेना भी ज़रुरी है, साहब आईने गुजरा हुआ वक्त नहीं बताया करते।

कविता

जी चाहता है

ऋचा बैजल
लिपिक
रानपुर शाखा

कुछ पल के लिए सब कुछ भूल जाने को 'जी' चाहता है,
तितली बन कर उड़ने का सपना पंख पसारता है।
'हूँ' कुछ बड़ी और समझदार मैं – कहती हूँ सब यूहीं,
लेकिन अब 'नासमझी' करने को 'जी' चाहता है ।।

जिंदगी की गंभीरताओं को हंसी,
में उड़ाने को 'जी' चाहता है।
उस 'रब' को शुक्रिया है हर पल,
कि अब मुस्कराने को 'जी' चाहता है ।।

दिल की उमंगें 'कविता' बन जाती है,
तब उनको कागज़ पे उतारने को 'जी' चाहता है।
मैं क्या हूँ, क्यों हूँ , कुछ न जानूं मैं,
अब कुछ नया कर जाने को 'जी' चाहता है।।

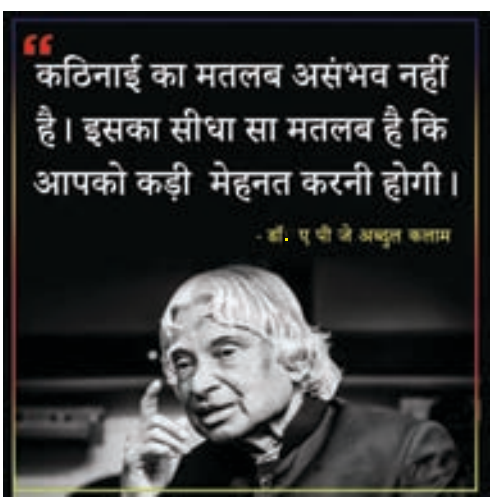

स्वाति झा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, गाज़ियाबाद

कविता

मंज़र

है काली स्याह रात और चांद बादलों में छुपा,
यह मंज़र अब डरावना सा लगता है।
कि जैसे निशा ने कहा और जलधर मयंक निगल गए,
तमस हर ओर है और मिहिर बस चांद में निहित,
यह मंज़र अब डरावना सा लगता है।।

शशि को भान है ये मेघ उसको लील ही लेंगे,
उसे यह मान है भानु का वह प्रतिबिंब धरा पर है,
करें तो क्या करें वो अभ्र जिस की ओट में अठखेलियां की थी।
कहां आभास था वही सारंग उसको तिमिर की भेंट कर देगा।।
यह कैसा था कपट, कैसा भ्रम, कैसा छल किया इसने,
यह मंज़र अब डरावना सा लगता है।।

जिसके साथ सोची थी गति जीवन को देने की,
सोचा था जिसे सहचर बनाया मीत भी होगा,
जो फूले न समाएगा मेरी उपलब्धियां सुनकर,
जो मुझ को आगे बढ़ने के सपने सुंदर दिखाएगा।।
उसी के सामने प्रतिदिन दोषी बन खड़ी हूँ मैं,
वही अब रोज मेरे अस्तित्व पर लांछन लगाता है,
यह मंज़र अब डरावना सा लगता है।।

आलेख

कृषि वित्त : मुख्य चुनौतियाँ व इसके समाधान

प्रवीण तिवाड़ी
वरिष्ठ प्रबंधक
जनगांव शाखा

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी लगभग 60% जनसंख्या का जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत कृषि एवं पशुपालन है जबकि अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान सकल घरेलु उत्पाद में केवल 19.40% है। भारत में ज़्यादातर क्षेत्रों में कृषि परंपरागत तरीकों से ही होती है। इस कारण कृषि में श्रम की लागत बढ़ जाती है तथा कृषि मानसून तथा जलवायु की परिस्थितियों पर निर्भर करती है। कृषि क्षेत्र में मौसमी बेरोज़गारी तथा प्रछन्न बेरोज़गारी पाई जाती है, जिसमें एक परिवार के सभी सदस्य अनावश्यक रूप से उसी खेती में लगे रहते हैं। अत:, परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति की आय कम रहती है।

इन सब बातों के अलावा कृषि क्षेत्र की कई अन्य समस्याएं हैं जैसे उपयुक्त या असंतुलित मानसून चक्र, अनुकूल जलवायु, कृषि उत्पाद के मूल्य में अस्थिरता, आपूर्ति श्रृंखला में उतार-चढ़ाव तथा उपयुक्त स्टोरेज व्यवस्था न रहने के कारण कुछ कृषि उत्पाद जैसे सब्ज़ी, फल आदि जल्दी ही खराब हो जाते हैं।

कृषि क्षेत्र के विकास तथा किसानों की कृषि आय बढ़ाने के लिए इन समस्याओं तथा जोखिमों से बचाव की ज़रूरत है। इस दिशा में प्राकृतिक आपदाओं के कारण किसानों को होने वाले नुकसान से बचने के लिए परम्परागत फसल बीमा (प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना) प्रमुख भूमिका निभा रही है। प्राकृतिक कारणों से होने वाले नुकसान को यह योजना कवर करती है। परंतु, कृषि उत्पादों की कीमतों में उतार-चढ़ाव से होने वाली हानि को कवर नहीं करती है। इसका निदान कृषि उत्पादों के डेरिवेटिव से लाभ कमाकर किया जा सकता है।

इस दिशा में, फ्यूचर तथा ऑप्शन डेरिवेटिव दो उत्पाद हैं जो कि अपनी कीमत किसी दूसरे उत्पाद (underlying asset) से उत्पन्न करते हैं तथा डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट में बेचने या खरीदने का अनुबंध पहले से निर्धारित कीमत पर करते हैं। ऑप्शन भी दो तरह के होते हैं – कॉल तथा पुट ऑप्शन।

विशेष रूप से पुट ऑप्शन इसमें बहुत उपयोगी साबित हो सकता है जो कि किसान को पहले से न्यूनतम कीमत पर निर्धारित (बुआई से पहले) करता है तथा खुले बाज़ार से कीमतों के बढ़ने से फायदा उठाने का विकल्प भी देता है।

इसका अर्थ यह है कि अगर कीमतें भविष्य में नीचे गिरती हैं तो किसान अपनी फसल पूर्व निर्धारित भाव पर विक्रेता को बेच सकता है। परंतु, कीमतें बढ़ने की स्थिति में खुले बाज़ार में बेच सकता है। पुट ऑप्शन को खरीदने के लिए एक निश्चित प्रीमियम किसान को ऑप्शन राईटर को देना पड़ता है ।

जोखिम का स्थानांतरण : इस प्रक्रिया के द्वारा जोखिम का स्थानांतरण किसान से बाज़ार के प्रतिभागी पर हो जाता है जो कि जोखिम लेने के लिए इच्छुक तथा सक्षम हो। इस दिशा में, सरकार को एक कृषि पुट ऑप्शन बनाने के बारे में सोचना चाहिए जिसमें सरकार पूर्ण या आंशिक भागीदारी ले। कंपनियों के कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) को इसके लिए प्रयोग किया जा सकता है। सम्पूर्ण रूप से विकसित डेरिवेटिव बाज़ार खुले बाज़ार को कृषि उत्पादों के बारे में कीमत का संकेत अच्छे से दे सकता है तथा सूचनाओं के माध्यम से भविष्य के कृषि भावों के बारे में किसानों को ज़ागरुक कर सकता है।

इस 'सूचना समरुपता' (Information symmetry) को वेब मॉडल में संक्षेप में बताया गया है। यह मॉडल बताता है कि किसान को उस फसल को उगाने का निश्चय करना है जिसके भाव वर्तमान में या पिछले वर्ष समान स्तर पर रहे हों। फसल चक्र पूरा होने के बाद, आपूर्ति ज़्यादा होने के कारण कीमत गिर जाती है। अगले सीजन में कम कीमत के कारण दूसरी फसल उगायी जाती है तथा कीमत फिर से प्रतिकूल रहती है व पुन: उच्च स्तर पर चली जाती है। अत:, बाज़ार उच्च व निम्न कीमतों के बीच परिचालित होता रहता है जो कि उत्पादन की अधिकता तथा कमी के परिणाम स्वरूप होता है।

जल्दी खराब होने वाले कृषि उत्पाद जैसे की सब्जी, फल इसके उदाहरण हैं, जिसकी कम कीमत रहने के कारण कभी-कभी किसानों को अपनी फसल सड़क पर फेंकनी पड़ती हैं। आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में इसके कई उदाहरण मिलते हैं।

इसमें सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका हर स्तर पर है। न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रोत्साहन की घोषणा तथा धान जैसी फसलों के लिए खुले बाज़ार में खरीदना भी इसके मूल्य में मनमानी ढंग़ से बढ़ावे को रोक सकता है। फिर भी, सरकार द्वारा कार्य करने के तरीके में महत्वपूर्ण बदलाव, उत्प्रेरक का काम कर सकता है तथा निजी क्षेत्र द्वारा अधिक खरीदारी कराए जाने की ज़रूरत भी पड़ सकती है।

कृषि क्षेत्र की एक अन्य समस्या बदलती जलवायु, अपर्याप्त मानसून तथा कृषि क्षेत्र में फसल चक्र को न अपनाने के कारण हैं। इसके निदान के लिए किसानों को उगाई जाने वाली फसलों में विविधता, फसल चक्र की वैज्ञानिक आवश्यकता, प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन, जीरो बजट खेती किए जाने की संभावना तलाशना तथा ज़ागरूकता फैलाए जाने की ज़रूरत है। इसके लिए कम बरसात में उगाई जाने वाली फसलें तथा विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छा उत्पादन देने वाली फसलों की प्रजातियों के विकास तथा संवर्धन करने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिए और इसके लिए परंपरागत कृषि विज्ञान केंद्र तथा कृषि विश्वविद्यालय में शोध के लिए नए निवेश तथा शोध का विकास एवं समर्थन किए जाने की आवश्यकता है। यद्यपि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना ने किसानों को उत्पादन के जोखिम से तो कुछ हद तक राहत प्रदान की है। परंतु, इस योजना में भी बहुत सारे सुधार किए जाने की ज़रूरत है। इन सुधारों में सबसे ज्यादा फसल के उत्पादन स्तर को एक ग्राम पटवार इकाई से खेत के लेवल तक ले जाने की ज़रूरत है। फिर भी, यह योजना कीमतों के उतार-चढ़ाव संबंधी जोखिम तथा कृषि क्षेत्र में आपूर्ति से संबंधित समस्याओं तथा कृषि के आधारभूत संरचना में सुधार के लिए बहुत बड़े निवेश तथा इच्छाशक्ति में मदद देती है। जो कि सरकारी तथा निजी क्षेत्र दोनों की समन्वित भागीदारी तथा सरकारी तंत्र द्वारा संबंधित कानूनों में सुधार एवं अनुकूलतम नीतियों पर निर्भर करता है। यदि, यही सब उपाय दल गत राजनीति तथा क्षेत्र विशेष के हितों को छोड़कर संपूर्ण देश के हित के लिए किए जाएं, तभी भारत का किसान तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की आत्मा कहा है, उन्हीं के शब्दों में आत्मनिर्भर तथा समेकित विकास के भारत की संकल्पना को साकार होते देखा जा सकता है।

महिला सम्मान बचत पत्र, 2023 योजना

महिला सम्मान बचत पत्र योजना भारत सरकार की नई लघु बचत योजना है। भारत की कोई भी निवासी महिला नागरिक स्वयं के लिए या किसी नाबालिग लड़की के लिए इस योजना के तहत खाता खुलवा सकती है। महिला सम्मान बचत पत्र एक महत्वपूर्ण पहल है जो महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक महत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई है। यह एक सामूहिक बचत योजना है जिसमें महिलाएं नियमित रूप से एक निर्धारित धन राशि को जमा कर सकती हैं। इस योजना के तहत, महिलाएं एक निश्चित अवधि के बाद उनकी जमाराशि पर ब्याज के साथ धन को वापस प्राप्त करेंगी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। इसके साथ ही, यह योजना महिलाओं में बचत की आदत विकसित करने में मदद करेगी। इस योजना के माध्यम से नारी शक्ति को सशक्त व आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

योजना की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

जमा राशि : न्यूनतम जमाराशि – ₹1000/– और ₹100/– के गुणकों में एवं अधिकतम जमाराशि – ₹200000/–

(एक महिला कितनी भी संख्या में खाते खोल सकती है।)

अवधि : खाता खोलने की तारीख से 2 वर्ष तक

कार्यावधि : योजना 01.04.2023 से 31.03.2025 तक वैध है।

ब्याज दर : 7.50% (तिमाही चक्रवृद्धि)

आवश्यक दस्तावेज़:

1. खाता खोलने का फार्म
2. रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो
3. आधार कार्ड
4. पैन कार्ड

समय पूर्व निकासी:

खाता खुलने की तारीख से 1 वर्ष पूरे होने के बाद, शुरुआत में जमा की गई राशि का 40% तक निकाला जा सकता है।

कुछ अन्य अपरिहार्य परिस्थितियों में भी खाते को बीच में बंद कराने की अनुमति है जैसे कि, खाताधारक की मृत्यु पर, किसी गंभीर बीमारी हो जाने पर। ऐसी स्थिति में खाता बीच में बंद किए जाने पर भी पूरा ब्याज मिलेगा।

आलेख

ओएनडीसी (ई-कॉमर्स इंडस्ट्री का यूपीआई)

अमित सिंह
अधिकारी
अंचल कार्यालय, भोपाल

ओएनडीसी क्या है :-

ओएनडीसी एक नॉन प्रॉफिट ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है इसको 29 अप्रैल 2022 को भारत के 5 शहरों में 9 सदस्यों की एक एडवाइज़री कमेटी की मदद से भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग संवर्धन व आंतरिक व्यापार विभाग, DPIIT (Department for Promotion of Industries and Internal Trade) ने लांच किया।

ओएनडीसी का पूरा नाम ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स है, यह यूपीआई की तरह एक इंटरऑपरेबल प्रोटोकाल पर आधारित है, मतलब यह कि खरीदारों और विक्रेताओं को अलग-अलग प्लेटफॉर्मों से एक-दूसरे को एक नेटवर्क में जोड़ता है। इसकी सहायता से एक ऑनलाइन विक्रेता और खरीदार दोनों भले ही अलग-अलग ऐप या प्लेटफॉर्म पर मौजूद हों लेकिन एक-दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं, जिससे खरीददार को एक सही उत्पाद या सेवा मिल पाएगी और एक विक्रेता का उत्पाद या सेवा अधिक से अधिक खरीददारों तक पहुँच पाएगी।

ओएनडीसी को और अच्छे से समझने के लिए ई-कॉमर्स इंडस्ट्री के नेटवर्क मॉडल के प्रकार को भी समझना होगा।

ई-कॉमर्स इंडस्ट्री नेटवर्क मॉडल के प्रकार:-

1. क्लोस्ड नेटवर्क मॉडल
2. ओपन नेटवर्क मॉडल

क्लोस्ड नेटवर्क मॉडल:-

क्लोस्ड नेटवर्क मॉडल में खरीददारों और विक्रेताओं को अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर खरीदने एवं बेचने के लिए रजिस्टर करना पड़ता है। एक प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर्ड विक्रेता केवल उसी प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर्ड खरीददार को सामान बेच सकता है, जैसे : फ्लिपकार्ट, अमेजॉन आदि।

ओपन नेटवर्क मॉडल:-

ओपन नेटवर्क मॉडल में खरीददारों और विक्रेताओं को किसी एक प्लेटफॉर्म पर खरीदने एवं बेचने के लिए रजिस्टर करना पड़ता है एवं खरीददार एक प्लेटफॉर्म पर ही रजिस्टर्ड हो या अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर्ड हो तब भी विक्रेताओं से सामान खरीद सकता है और विक्रेता एक प्लेटफॉर्म पर ही रजिस्टर्ड हो या अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर रजिस्टर्ड हो तब भी खरीददार को सामान बेच सकता है, जैसे : ओएनडीसी

ओएनडीसी की क्यों ज़रूरत पड़ी ?

वर्तमान ई-कॉमर्स इंडस्ट्री भारत में 72 बिलियन डालर की है जो कि वर्ष 2030 तक 350 बिलियन डालर की हो जाएगी और फ्लिपकार्ट का मार्केट शेयर 48% एवं अमेजॉन का मार्केट शेयर 26% है और इन दोनों का ई-कॉमर्स इंडस्ट्री में काफी बड़ा दबदबा है।

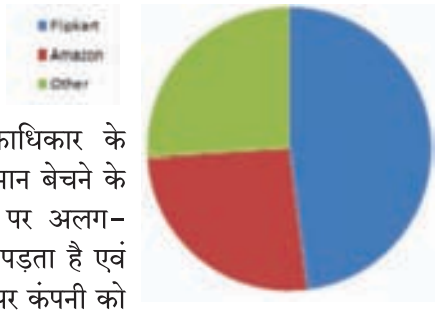

इन कंपनियों के एकाधिकार के चलते विक्रेता को सामान बेचने के लिए इनके प्लेटफॉर्म पर अलग-अलग रजिस्टर करना पड़ता है एवं हर प्रोडक्ट की बिक्री पर कंपनी को कमीशन देना पड़ता है। जिससे विक्रेता का सकल मार्जिन कम हो जाता है। जिस प्रोडक्ट की बिक्री ज्यादा होती है कंपनी खुद वह सामान बेचने लगती है एवं विक्रेता के सामान को आखिर में दिखाती है जिससे विक्रेता की बिक्री कम हो जाती है।

छोटे-छोटे शहरों और ग्रामीण के व्यापारी वहाँ पर सुविधा उपलब्ध न होने के कारण अपने उत्पाद या सेवाओं को ऑनलाइन नहीं बेच पा रहे हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को ऑनलाइन अच्छी सुविधाएं भी नहीं मिल पा रही हैं और इससे ग्राहक और व्यापारी दोनों का ही नुकसान हो रहा है इन्हीं कारणों की वजह से भारत सरकार ने ओएनडीसी प्लेटफॉर्म लॉन्च किया है।

ओएनडीसी कैसे काम करता है ?

ओएनडीसी ई-कॉमर्स इंडस्ट्री में वैसा है जैसा ऑनलाइन पेमेंट्स में यूपीआई होता है, यूपीआई की मदद से हम किसी के भी बैंक खाते में पैसे ऑनलाइन भेज पाते हैं भले ही सेंडर और रिसीवर का यूपीआई ऐप अलग-अलग क्यों न हो, उस तरह ओएनडीसी भी ई-कॉमर्स इंडस्ट्री में कार्य करेगा, जैसा की हमने ओपन नेटवर्क मॉडल में समझा है। इसके अलावा ग्राहक के पास मौजूदा जगह पर डिलीवरी सर्विस सेलेक्ट करने का भी विकल्प होगा।

ओएनडीसी के फायदे:-

आप कोई प्रोडक्ट ऑनलाइन खरीदते हैं तो उसके प्राइस को चेक करने के लिए आपको अलग-अलग साइट पर विज़िट करने पर पता चलता है कि उसकी प्राइस अलग-अलग साइट पर क्या है। जबकि, ओएनडीसी प्लेटफॉर्म पर आप एक ही जगह पर अलग-अलग साइट पर मिल रहे प्रोडक्ट की कीमत जान सकते हैं।

ओएनडीसी प्लेटफॉर्म से छोटे-छोटे विक्रेता और लॉजिस्टिक कंपनी को काफी फायदा मिलेगा क्योंकि ओएनडीसी प्लेटफॉर्म पर विक्रेता से कुछ भी प्राइस चार्ज नहीं लिया जाएगा।

खरीददारों और विक्रेताओ को अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर खरीदने एवं बेचने के लिए रजिस्टर नहीं करना पड़ता है।

प्रोडक्ट की बिक्री पर कंपनी को कमीशन भी नहीं देना पडेगा।

बैंकिंग में ओएनडीसी का महत्व :-

वर्तमान मे छोटे-छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्र के व्यापारी वहाँ पर सुविधा उपलब्ध न होने के कारण अपने उत्पाद या सेवाओं को ऑनलाइन नहीं बेच पा रहे हैं इस कारण यह लोग क्रेडिट सुविधा से वंचित रह जाते हैं लेकिन ओएनडीसी की वजह से इनकी सेल्स बढ़ेगी एवं ये लोग क्रेडिट सुविधा का उपयोग कर पाएंगे एवं बिक्री ऑनलाइन होने की वजह से अपने सेल्स का रिकार्ड बैंक को दिखाने में आसानी होगी।

आने वाले समय में, व्यापारी ऑनलाइन लोन के लिए आवेदन कर सकेगा। उस आवेदन को सभी रजिस्टर्ड बैंक देख पाएंगी एवं सेल्स रिकार्ड देख कर बैंक कम समय के अंदर लोन दे पाएगी। इससे व्यापारी को कम समय में लोन एवं बैंक के पास ऑनलाइन रिकार्ड होने के कारण ज्यादा पेपर लेने की आवश्यकता नहीं होगी।

ओएनडीसी के लिए चैलेंज:-

हर खरीददार को बहुत सारे विक्रेता के विकल्प दिखते हैं तो ज्यादा विकल्प होने की वजह से खरीददार को सामान खरीदने में समय लगेगा एवं सबकी रेटिंग उपलब्ध न होने की वजह से खरीददार को निर्णय लेने में समस्या होगी एवं इसके अलावा आम व्यापारी को रजिस्टर कराना एक चैलेंज रहेगा।

निष्कर्ष:-

यूपीआई के बाद ओएनडीसी भारत सरकार की एक काफी अच्छी शुरुआत है। जिस तरह यूपीआई ने डिजिटल इंडिया को काफी अधिक बढ़ावा दिया है उसी तरह यह भी डिजिटल इंडिया को काफी आगे ले जा सकता है और भारत की अर्थव्यवस्था पर यह काफी अच्छा प्रभाव डाल सकता है। इसका एक बड़ा फायदा यह भी होने वाला है कि ग्रामीण इलाकों के खरीददार और विक्रेता भी अब एक बेहतर ई- कॉमर्स सर्विस का लाभ उठा पाएंगे।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला

बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य असमिया साहित्यकार थे। समाजवादी विचारों से प्रेरित बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य कहानीकार, कवि, निबंधकार और पत्रकार थे। वे साहित्य अकादमी, दिल्ली और असम साहित्य सभा के अध्यक्ष भी रहे। बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने कहानी, उपन्यास, यात्रावृत्तांत, निबंध आदि विभिन्न विधाओं में पचास से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनका अधिकांश लेखन असमिया में हुआ। हिंदी में उनका बहुत थोड़ा साहित्य उपलब्ध है। लेकिन उससे यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि वह किस कोटि के लेखक थे। उन्होंने अछूते विषयों को उठाया और पूरे रागात्मक बोध के साथ उनमें प्रवेश कर उन्हें सजीव बनाया। उनकी रचनाओं में असम के ग्राम्यांचलों का जनजीवन मूर्त हो उठता है। नागालैंड की पहाड़ियाँ, जंगल-नदियाँ, धान के खेत और उन खेतों में काम करते स्त्री-पुरुष अपनी खुशियों और व्यथाओं के साथ पाठक की स्मृतियों में बस जाते हैं। किसी लेखक की कसौटी होती है। देश और काल को बाँधने की क्षमता। प्रवाहमान क्षणों को पकड़ना और उन्हें कील देना ही कला है। इस काम के लिए कलाकार को जिस स्पेस या कैनवस की ज़रूरत होती है, उसके रेशे-रेशे से परिचित होना उसके लिए ज़रूरी होता है। भारतीय साहित्य के यशस्वी हस्ताक्षर बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य का जन्म 14 अक्टूबर, 1924 को असम में हुआ। जोरहाट गवर्नमेंट हाई स्कूल और गुवाहाटी के काटन कालेज में पढ़ाई के बाद, वे साहित्य लेखन, पत्रकारिता और स्वाधीनता आन्दोलन में एक साथ कूद पड़े

बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
(14 अक्टूबर 1924 - 6 अगस्त 1997)

और तीनों ही क्षेत्र में अपने समर्पित योगदान के लिए अपनी विशिष्ट पहचान बनायी। देश का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त बड़ा लेखक होने के बावजूद बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य बहुत सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। साहित्य अकादमी जैसी सर्वोच्च साहित्यिक संस्था का अध्यक्ष होते हुए भी वे युवा लेखकों की बैठकों में शामिल होने में अत्यंत प्रसन्नता अनुभव करते थे। उन्होंने 1950 में संपादित असमी पत्रिका 'रामधेनु' का संपादन कर असमिया साहित्य को नया मोड़ दिया। बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के चर्चित उपन्यासों 'इयारूंगम', 'मृत्युंजय', 'राजपथे', 'रिंगियाई', 'आई', 'प्रितपद', 'शतघ्नी', 'कालर हुमुनियाह' हैं। उनके दो कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए- 'कलंग आजियो बोइ' और 'सातसरी'। पिछले पचास सालों में बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के पचास से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हैं, जिनमें उपन्यास, कहानी-संग्रह, कविता-संकलन, यात्रा-वृत्तांत तथा निबंध, लोक साहित्य तथा गद्य लेखन सभी सम्मिलित हैं। अपने लेखन के लिए उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय पुरस्कारों तथा साहित्यिक संस्थाओं से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा रचित उपन्यास 'इयारुइंगम' के लिए उन्हें 1961 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (असमिया) से सम्मानित किया गया और 1979 में उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

दिनांक 15 जून, 2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा हमारे अंचल कार्यालय, लखनऊ का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान उप-समिति के संयोजक माननीय सांसद, डॉ. मनोज राजोरिया जी, समिति के अन्य माननीय सांसद श्री दिनेश चंद्र यादव जी, डॉ. अमी याज्ञिक जी, श्रीमती कांता कर्दम जी, सुश्री सरोज पाण्डेय जी उपस्थित थे। निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक का प्रतिनिधित्व करने हेतु केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय की ओर से श्री टी के वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, श्री ई रमेश, सहायक महाप्रबंधक तथा अंचल कार्यालय, लखनऊ से महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री आलोक कुमार अग्रवाल एवं श्री शशिकांत पांडेय, प्रबंधक मौजूद रहे।

दिनांक 15 जुलाई, 2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा हमारे अंचल कार्यालय, पटना का राजभाषायी निरीक्षण रांची में किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान उप-समिति के संयोजक माननीय सांसद, डॉ. मनोज राजोरिया जी, समिति के अन्य माननीय सांसद श्री दिनेश चंद्र यादव जी, डॉ. अमी याज्ञिक जी, श्रीमती कांता कर्दम जी, सुश्री सरोज पाण्डेय जी तथा समिति के सचिव श्री धर्मराज खटीक एवं वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय से श्री सुधीर श्याम, आर्थिक सलाहकार, श्री सर्वेश कुमार मिश्र, सहायक निदेशक उपस्थित थे। निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक का प्रतिनिधित्व करने हेतु केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय की ओर से श्री टी के वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, श्री ई रमेश, सहायक महाप्रबंधक तथा अंचल कार्यालय, पटना से महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री अरुण कुमार मिश्रा एवं श्री रवि प्रकाश सुमन, प्रबंधक मौजूद रहे।

केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can

डिजिटल भारत की गौरवपूर्ण गाथा में अपना योगदान!
केनरा बैंक ने प्राप्त किया महत्वपूर्ण प्रथम स्थान!!

केनरा बैंक की ओर से

77 वें

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

देश के **डिजिटल बैंकिंग** के नवीन आयामों के सुनहरे सफर में, बैंकों में शीर्ष स्थान प्राप्त करने का गौरव, आपके केनरा बैंक को प्राप्त हुआ है। हम **300+** फीचर्स के साथ हमारे अत्यधिक लोकप्रिय **केनरा ai1: बैंकिंग सुपर एप, केनरा डिजिटल रुपए, ए पी आई बैंकिंग** और अनेक डिजिटल उत्पादों के साथ, आपकी सेवा में तत्पर हैं। बेहतर कल हेतु भविष्य के लिए तैयार हमारी सक्षम सेवाओं से जुड़े।

MeitY, भारत सरकार द्वारा लगातार दूसरे वर्ष, डिजिटल बैंकिंग और मर्चेंट अधिग्रहण के अंतर्गत भारत के समस्त बैंकों में
प्रथम स्थान 1
वित्तीय वर्ष 2021-22 तथा 2022-23

हमारे डिजिटल एवं खुदरा उत्पाद:

केनरा बैंक एपीआई बैंकिंग
केनरा प्रीमियम पेरोल खाता
केनरा गृह ऋण
केनरा कार ऋण
केनरा स्वर्ण ऋण
केनरा शिक्षा ऋण

www.canarabank.com | 1 बैंक नंबर 1800 1030